नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 04, अंक 197, नई दिल्ली, गुरुवार 22 अक्टूबर 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

नसीबों को कोसने से क्या फायदा, हुनर पाने के लिए हाथ की लकीरें घिसनी पड़ती हैं।

● 02 संक्रमित दांत का इलाज- सिर्फ दांत नहीं, पूरे शरीर का स्वास्थ्य
● 06 महिलाओं की समझदारी: धारणा या वैज्ञानिक तथ्य?
● 08 सड़कें नहीं झारखंड में मरीज़ खटिये पर, मंत्री-अभियंता यहां कभी बाहर तो कभी अंदर

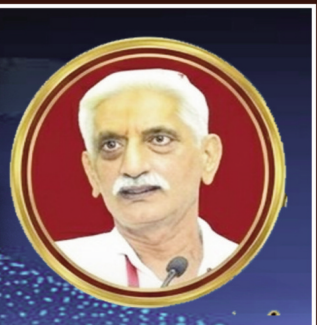
परिवहन विशेष समाचार पत्र को जिस तरह आप लोगों के सहयोग लगातार पिछले 3 वर्षों से प्राप्त हुआ और दिन प्रतिदिन आपकी आवाज को आगे पहुंचाने में आपका सहयोगी बना उसको देखते हुए परिवहन विशेष समाचार पत्र के प्रबंधक मंडल और ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज लिमिटेड कंपनी द्वारा जनहित, जनकल्याण जनसूचना और जानकारी को और तेजी से भारत सरकार और राज्य सरकारों के साथ सभी राजनीतिक संगठनों को सबसे पहले पहुंचाने के उद्देश्य से अक्टूबर माह से जनता की आवाज का अपना चैनल "परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन" शुरू करने का निर्णय लिया है।

जल्द आपके बीच में....

परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन

बड़ी खुशखबरी! अब आपकी आवाज गूंजेगी पूरी दुनिया में
परिवहन विशेष समाचार पत्र के सफल 3 वर्षों के बाद अब नई क्रांति

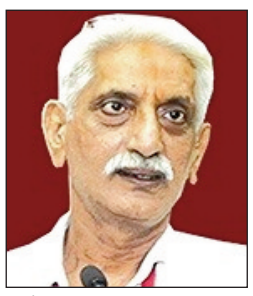
आशा करते हैं जैसे आपने आज के इस दौर मे "परिवहन विशेष समाचार पत्रों" को इतना आगे ले कर जाने में सहयोग दिया उसी प्रकार हमारे द्वारा आपकी आवाज बनने के लिए शुरू किए जा रहे "परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन" को विश्व का सबसे बड़ा चैनल बनवाएंगे।



संजय बाठला
मुख्य संपादक

पुणे में कार्रवाई, दिल्ली में कब? - निजी नंबरों से व्यावसायिक सवारी पर रोक कब लगेगी?

अन्य राज्यों में संभव तो दिल्ली में क्यों नहीं — सुरक्षित, समयानुसार सार्वजनिक सवारी सेवा जनता का अधिकार है



संजय कुमार बाठला, प्रधान संपादक - परिवहन विशेष समाचार पत्र

पुणे की कार्रवाई ने दिखा दिया — इच्छाशक्ति हो तो नियम लागू होते हैं। दिल्ली अब और देर नहीं कर सकती। यदि अन्य राज्यों में यह संभव है, तो दिल्ली में क्यों नहीं?

दिल्ली परिवहन विभाग और यातायात पुलिस को सहयोग नहीं, सख्ती दिखानी होगी — और जनता को सुरक्षित, समयानुसार सार्वजनिक सवारी सेवा उपलब्ध करानी होगी। यही जनहित है, यही कानून का शासन है।

मुख्य तथ्य — पुणे मामला

- स्थान: पुणे, विश्रांतवाड़ी थाना
- कंपनी: Roppen Transport Services — Rapido संचालक
- आरोप: बिना लाइसेंस/परमिट के निजी, गैर-परिवहन दोपहिया वाहनों से व्यावसायिक यात्री परिवहन
- कार्रवाई का आधार: जिलाधिकारी के निर्देश के बाद भी सेवा जारी रहने पर FIR — BNS, मोटर वाहन अधिनियम और IT अधिनियम के प्रावधान लागू
- गुप्त जांच: मोटर वाहन निरीक्षक ने ग्राहक बनकर येरवडा से कोथरूड के लिए राइड बुक की, पेट्रोल मोटरसाइकिल पहुंची, वाहन जब्त और चालान

FIR आरोपों की जांच शुरू करती है और यह सवाल खड़ा करती है — नियमों के पालन में दोहरा मापदंड क्यों?

मुख्य बिंदु

- 1. पुणे ने दिखाया रास्ता: जब प्रशासन चाहे तो ऐप आधारित अवैध बाइक टैक्सी पर गुप्त जांच, FIR और जब्ती हो सकती है
- 2. दिल्ली का सवाल: दिल्ली में रोजाना निजी नंबरों वाली बाइक, स्कूटर और कारें व्यावसायिक सवारी सेवा में चलती दिखाई देती हैं — मोटर वाहन नियम के अनुसार यह अवैध है
- 3. सहयोग का आरोप: जनता का सवाल है कि क्या दिल्ली परिवहन विभाग और यातायात पुलिस की निष्क्रियता या मिलीभगत से यह व्यवस्था फल-फूल रही है?
- 4. अन्य राज्य उदाहरण: महाराष्ट्र, कर्नाटक, गुजरात जैसे राज्यों में सख्त कार्रवाई और नीति स्पष्टता के बाद नियंत्रण हुआ है — दिल्ली में क्यों नहीं?

विस्तृत विश्लेषण

1. मोटर वाहन नियम क्या कहता है? व्यावसायिक यात्री परिवहन के लिए ट्रांसपोर्ट (पीली/काली प्लेट) पंजीकरण, परमिट, फिटनेस, बीमा और चालक का व्यावसायिक लाइसेंस अनिवार्य है। निजी वाहन (सफेद प्लेट) से किराए पर सवारी ढोना मोटर वाहन अधिनियम का सीधा उल्लंघन है। दुर्घटना की स्थिति में यात्री को बीमा कवर नहीं मिलता, चालक की जवाबदेही तय नहीं होती।



अक्टूबर 2026 | परिवहन विशेष समाचार पत्र

पुणे में कार्रवाई, दिल्ली में कब? निजी नंबरों से व्यवसायिक सवारी पर रोक कब लगेगी?

अन्य राज्यों में संभव तो दिल्ली में क्यों नहीं — सुरक्षित सार्वजनिक सवारी सेवा जनता का अधिकार

संपादकीय : सख्ती की जरूरत

पुणे में हाल ही में निजी वाहनों को व्यावसायिक सवारी के लिए उपयोग करने पर प्रशासन ने कड़ी कार्रवाई की है। अवैध बाइक टैक्सी और निजी नंबरों से चलने वाली कैब सेवाओं पर जुर्माना और वाहन ज़ब्ती की गई। अब सवाल दिल्ली का है। यहाँ रोज़ाना हज़ारों निजी बाइक और कारें बिना परमिट के सवारी सेवा दे रही हैं। यह न केवल अवैध है बल्कि यात्री सुरक्षा के लिए भी जोखिम है। अन्य राज्य जैसे महाराष्ट्र, कर्नाटक और गुजरात ने नियमों को सख्त कर प्रवर्तन शुरू किया है। दिल्ली में भी समान कदम उठाने की मांग तेज़ हो रही है। विशेषज्ञों का कहना है कि जहाँ का व्यावसायिक परमिट के चालने वार नागरिक का अधिकार है। दिल्ली प्रशासन पहली और ओर नियमि जाँच अभियान विशेषज्ञों बोना आक्षित संजमित लसरासासवी सार्वजनिक सवार है। विशेषज्ञों का कहना है कि बिना वैध लाइसेंस और व्यावसायिक परमिट के चलने वाली ये सेवाएँ यात्रियों के बीमा, सुरक्षा और कानूनी जिम्मेदारी से बाहर हैं। सुरक्षित और विनियमित सार्वजनिक सवारी सेवा हर नागरिक का अधिकार है। दिल्ली प्रशासन को अब ठोस नीति और नियमित जाँच अभियान शुरू करना होगा।

संजय कुमार बाठला • प्रधान संपादक | पिंकी कुंडू • सह संपादक

— परिवहन विशेष समाचार पत्र, अक्टूबर 2026 • संपादकीय

2. दिल्ली में व्यवस्था क्यों चलती है?

- मांग की कमी नहीं: सार्वजनिक परिवहन समयानुसार, हर रूट पर और रात में पर्याप्त नहीं है — यात्री मजबूरी में निजी नंबरों की सेवा लेते हैं
- प्रवर्तन की कमी: चेकिंग अभियान छिटपुट होते हैं, स्थायी रोक नहीं लगती
- ऐप की आड़: ऐप के माध्यम से बुकिंग होने पर आम जनता को यह सेवा वैध लगती है, जबकि वाहन का पंजीकरण निजी होता है

3. जनता को सुरक्षित सार्वजनिक सवारी का अधिकार सरकार की जिम्मेदारी सिर्फ नियम बनाना नहीं, विकल्प देना भी है — समयानुसार बस, मेट्रो फीडर, शेयर ऑटो, वैध बाइक टैक्सी और महिला-रात्रि सुरक्षा वाली सेवा। जब तक सुरक्षित सार्वजनिक सेवा नहीं होगी, तब तक अवैध सेवा की मांग बनी रहेगी।

4. क्या करना होगा?

- दिल्ली परिवहन विभाग और यातायात पुलिस: पुणे की तरह गुप्त जांच, नियमित अभियान, ऐप कंपनियों को नोटिस, वाहन जब्ती और FIR
- ऐप कंपनियों पर जवाबदेही: सिर्फ निजी नंबर के वाहनों को प्लेटफॉर्म पर न आने दें, सत्यापन और परमिट जांच अनिवार्य करें
- सार्वजनिक परिवहन में निवेश: रूट विस्तार, फ्रीक्वेंसी, समयसारणी और अंतिम छोर (last-mile) कनेक्टिविटी
- जनता की भागीदारी: यात्री अवैध सेवा से बचें, वैध वाहन की पहचान करें — नंबर प्लेट, परमिट और बीमा की जांच करें

संपादकीय टिप्पणी पुणे की कार्रवाई ने दिखा दिया — इच्छाशक्ति हो तो नियम लागू होते हैं। दिल्ली अब और देर नहीं कर सकती। यदि अन्य राज्यों में यह संभव है, तो दिल्ली में क्यों नहीं? दिल्ली परिवहन विभाग और यातायात पुलिस को सहयोग नहीं, सख्ती दिखानी होगी — और जनता को सुरक्षित, समयानुसार सार्वजनिक सवारी सेवा उपलब्ध करानी होगी। यही जनहित है, यही कानून का शासन है।

माँ दुर्गा को श्रद्धा से विसर्जन करने वाले भक्तों का बुरी तरह दुखा दिल

यशोभूमि के सामने पोचनपुर में विसर्जन स्थल पर पानी की जगह मिला कीचड़ — क्या यही है दिल्ली सरकार की हिंदुओं की भक्ति के लिए भावना?

संजय कुमार बाठला, प्रधान संपादक - परिवहन विशेष समाचार पत्र

माँ दुर्गा का विसर्जन सिर्फ मूर्ति का विसर्जन नहीं, भक्त की श्रद्धा का समर्पण है। जब प्रशासन भक्त को कीचड़ में विसर्जन करने को मजबूर करता है, तो वह श्रद्धा का अपमान है। दिल्ली सरकार को यह समझना होगा — भक्ति के लिए भावना कागजों में नहीं, धरातल पर दिखनी चाहिए।

मुख्य तथ्य

- स्थान: यशोभूमि के सामने, पोचनपुर गाँव के पास, दिल्ली
- व्यवस्था: प्रशासन द्वारा माँ दुर्गा विसर्जन के लिए बनाई गई जगह
- जमीनी स्थिति: भक्तों के पहुंचने पर पानी की जगह कीचड़, गंदगी और प्लास्टिक की चादरें
- प्रभाव: मूर्तियां कीचड़ में कंसी, भक्तों को कीचड़ में उतरकर विसर्जन करना पड़ा, क्रेन की मदद लेनी पड़ी
- भक्तों का आरोप: श्रद्धा का अपमान, प्रशासनिक लापरवाही

मुख्य बिंदु

- 1. श्रद्धा पर चोट: माँ दुर्गा का विसर्जन आस्था का सबसे पवित्र क्षण है — कीचड़ में विसर्जन ने भक्तों के दिल को बुरी तरह दुखाया
- २. व्यवस्था सिर्फ कागजों पर: प्रशासन ने जगह तो बनाई, पर साफ पानी, ग्रेवित गहराई, रैंप और सफाई की कोई व्यवस्था नहीं
- ३. सुरक्षा का सवाल: कीचड़ भरे कुंड में बच्चे, महिलाएं और बुजुर्ग फिसल सकते थे — कोई सुरक्षा व्यवस्था नजर नहीं आई
- 4. भक्ति का सवाल: अगर यही व्यवस्था है तो क्या दिल्ली सरकार की हिंदू भक्ति के प्रति यही भावना है?

विस्तृत विश्लेषण

1. क्या हुआ पोचनपुर में? तस्वीरों से साफ है — पोचनपुर विसर्जन स्थल पर काली प्लास्टिक की चादर बिछाकर बनाया गया कुंड पानी से नहीं, कीचड़ और कचरे से भरा था। फूल-मालाएं, मूर्तियों के अवशेष, लकड़ी के ढांचे सब कीचड़ में तैर रहे थे। भक्तों ने अपनी माँ को इस हालत में देखा तो आंखें नम हो गईं। कार्यकर्ता कीचड़ में घुसकर मूर्ति निकालते दिखे।

२. क्यों हुई लापरवाही? प्रशासनिक तैयारियां अक्सर विसर्जन के अंतिम क्षण में बनती हैं — कुंड की सफाई नहीं, पानी की आपूर्ति नहीं, निकासी की योजना नहीं। यही कारण है कि हर साल भक्तों को यही दर्द झेलना पड़ता है। श्रद्धा को व्यवस्था नहीं, सिर्फ औपचारिकता माना जाता है।

३. दिल्ली सरकार और प्रशासन से सवाल

- क्या विसर्जन से पहले स्थल का निरीक्षण हुआ था?
- क्या पानी की पर्याप्त व्यवस्था, स्वच्छ कुंड और सफाईकर्मी तैनात थे?



अक्टूबर 2026 | परिवहन विशेष समाचार पत्र

माँ दुर्गा विसर्जन में मिला कीचड़ — भक्तों का दिल दुखा

पानी की जगह कीचड़, श्रद्धा का अपमान — यशोभूमि के सामने पोचनपुर में प्रशासन की लापरवाही

पोचनपुर विसर्जन स्थल पर कीचड़ में फंसे दुर्गा प्रतिमा को निकालते हुए कार्यकर्ता, यशोभूमि के पास — अक्टूबर 2026

कीचड़ से भरा विसर्जन कुंड, साफ पानी के अभाव में श्रद्धा का प्रतीक बहता कचरा

संपादकीय — श्रद्धा के नाम पर घोर लापरवाही

पोचनपुर, यशोभूमि दिल्ली — नवरात्रि के समापन पर माँ दुर्गा विसर्जन के दौरान पोचनपुर स्थित विसर्जन स्थल पर पानी की जगह केवल कीचड़ और गंदगी मिली। श्रद्धालुओं ने बताया कि वर्षों से विसर्जन लिए बने कुंड में जलापूर्ति न होने के कारण कीचड़ जमा हो गया, जिससे श्रद्धा को ठेस पहुंची। स्थानीय भक्तों ने प्रशासन की अनदेखी पर रोष व्यक्त किया, कहा कि श्रद्धा का यह अपमान स्वीकार नहीं। अब समय है कि प्रशासन भविष्य में स्पष्ट और सुरक्षित विसर्जन व्यवस्था सुनिश्चित करे, ताकि आस्था को सम्मान मिल सके।

संजय कुमार बाठला • प्रधान संपादक | पिंकी कुंडू • सह संपादक









- क्या यशोभूमि जैसे बड़े केंद्र के सामने ऐसी व्यवस्था शोभा देती है?
- भविष्य में विसर्जन के लिए स्थायी, स्वच्छ और सुरक्षित व्यवस्था कब बनेगी?

4. जनहित में क्या होना चाहिए?

- स्थायी विसर्जन कुंड — साफ पानी, पर्याप्त गहराई, पक्की व्यवस्था
- क्रेन, रैंप, सुरक्षा रस्सी और तैनात कर्मियों की व्यवस्था
- विसर्जन के बाद तत्काल सफाई और पर्यावरणीय प्रबंधन
- भक्तों की भावना का सम्मान — विसर्जन सिर्फ रस्म नहीं, आस्था है

संपादकीय टिप्पणी

> माँ दुर्गा का विसर्जन सिर्फ मूर्ति का विसर्जन नहीं, भक्त की श्रद्धा का समर्पण है। जब प्रशासन भक्त को कीचड़ में विसर्जन करने को मजबूर करता है, तो वह श्रद्धा का अपमान है। दिल्ली सरकार को यह समझना होगा — भक्ति के लिए भावना कागजों में नहीं, धरातल पर दिखनी चाहिए।

जनहित, जनकल्याण, जनसूचना के लिए — परिवहन विशेष समाचार पत्र - संजय कुमार बाठला, प्रधान संपादक। पिंकी कुंडू, सह संपादक

दिल्ली-NCR में वायु प्रदूषण - GRAP Stage-I लागू, सख्त निगरानी शुरू

वायु गुणवत्ता 'खराब' श्रेणी में पहुंची — GRAP Stage-I के सभी कदम तत्काल प्रभाव से लागू, नागरिकों से चार्टर पालन की अपील

संजय कुमार बाठला, प्रधान संपादक - परिवहन विशेष समाचार पत्र

GRAP Stage-I की घोषणा सिर्फ एक आदेश नहीं, चेतावनी है दिल्ली-NCR की हवा हर साल इसी समय बिगड़ती है और हम हर साल यही आदेश देखते हैं। अब आवश्यकता है — आदेश के साथ क्रियान्वयन, प्रदूषण स्रोतों पर निरंतर कार्रवाई और जनता की भागीदारी। स्वच्छ हवा अधिकार है, विलासिता नहीं।

परिवहन विशेष समाचार पत्र के प्रधान संपादक के प्रशासन से सवाल

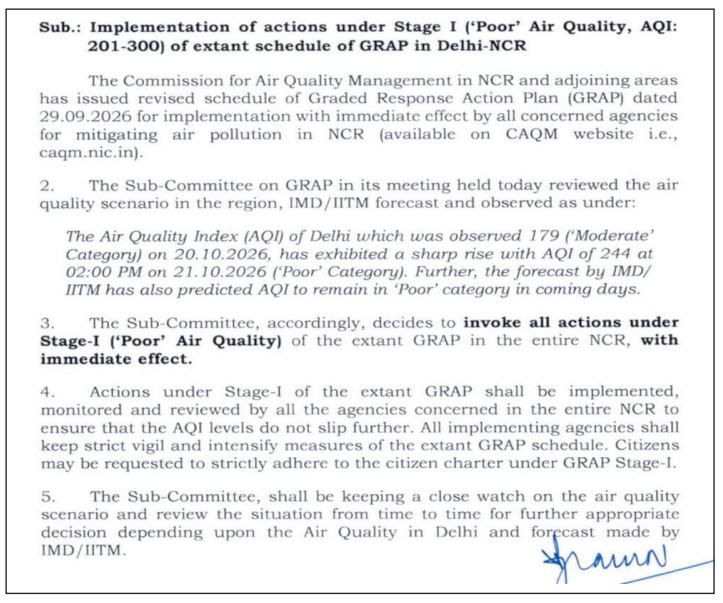
- क्या सभी एजेंसियों के बीच समन्वय है?
- क्या निर्माण स्थलों पर GRAP का पालन हो रहा है?
- क्या दिल्ली में सार्वजनिक परिवहन समयानुसार और पर्याप्त है, ताकि लोग निजी वाहन छोड़ें?
- Stage-I को सिर्फ कागजी आदेश न रहने दिया जाए — जमीन पर प्रभाव दिखे

मुख्य तथ्य

- आदेश: Commission for Air Quality Management (CAQM) का आदेश — GRAP Stage-I लागू
- कारण: दिल्ली का AQI 20 अक्टूबर को 179 (Moderate) से बढ़कर 21 अक्टूबर को 244 (Poor) पर पहुंचा — IMD/IITM का पूर्वानुमान आने वाले दिनों में भी 'खराब' श्रेणी में बने रहने का
- क्षेत्र: पूरे दिल्ली-NCR में तत्काल प्रभाव से
- निगरानी: सभी संबंधित एजेंसियों द्वारा कार्यान्वयन, मॉनिटरिंग और समीक्षा — AQI को और नीचे न जाने देने के लिए सख्त निगरानी
- नागरिक भूमिका: Citizens Charter under GRAP Stage-I का सख्ती से पालन करने का अनुरोध

मुख्य बिंदु

- 1. Stage-I क्या है: 'खराब' (AQI 201-300) श्रेणी में प्रदूषण रोकने के लिए GRAP का पहला चरण — धूल, वाहन उत्सर्जन, निर्माण और कचरा जलाने पर नियंत्रण
- 2. तत्काल प्रभाव: CAQM की उप-समिति की बैठक में निर्णय — सभी एजेंसियां उपायों को तेज करें
- 3. वायु गुणवत्ता का उतार: एक दिन में Moderate से Poor में गिरावट — प्रदूषण की रफ्तार चिंताजनक
- 4. जनहित की चेतावनी: समय रहते उपाय नहीं हुए तो Stage-II, III और IV की ओर बढ़ सकता है संकट



Sub.: Implementation of actions under Stage I ('Poor' Air Quality, AQI: 201-300) of extant schedule of GRAP in Delhi-NCR

The Commission for Air Quality Management in NCR and adjoining areas has issued revised schedule of Graded Response Action Plan (GRAP) dated 29.09.2026 for implementation with immediate effect by all concerned agencies for mitigating air pollution in NCR (available on CAQM website i.e., caqm.nic.in).

2. The Sub-Committee on GRAP in its meeting held today reviewed the air quality scenario in the region, IMD/IITM forecast and observed as under:

The Air Quality Index (AQI) of Delhi which was observed 179 ('Moderate' Category) on 20.10.2026, has exhibited a sharp rise with AQI of 244 at 02:00 PM on 21.10.2026 ('Poor' Category). Further, the forecast by IMD/IITM has also predicted AQI to remain in 'Poor' category in coming days.

3. The Sub-Committee, accordingly, decides to **invoke all actions under Stage-I ('Poor' Air Quality)** of the extant GRAP in the entire NCR, **with immediate effect.**

4. Actions under Stage-I of the extant GRAP shall be implemented, monitored and reviewed by all the agencies concerned in the entire NCR to ensure that the AQI levels do not slip further. All implementing agencies shall keep strict vigil and intensify measures of the extant GRAP schedule. Citizens may be requested to strictly adhere to the citizen charter under GRAP Stage-I.

5. The Sub-Committee, shall be keeping a close watch on the air quality scenario and review the situation from time to time for further appropriate decision depending upon the Air Quality in Delhi and forecast made by IMD/IITM.

विस्तृत विश्लेषण

1. GRAP क्या है और Stage-I क्यों महत्वपूर्ण है? Graded Response Action Plan (GRAP) एक चरणबद्ध योजना है — AQI के स्तर के अनुसार अलग-अलग कार्रवाई। Stage-I सबसे शुरुआती लेकिन सबसे महत्वपूर्ण चरण है। इसका उद्देश्य प्रदूषण को शुरू में ही रोकना है, ताकि स्थिति गंभीर न हो।

Stage-I के तहत मुख्य कदम:

- निर्माण और धूल नियंत्रण — नियमित पानी छिड़काव, धूल रोधक उपाय
- वाहनों का प्रदूषण नियंत्रण — पुराने, प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों पर निगरानी
- कचरा और पराली जलाने पर रोक
- सड़क सफाई और यातायात सुचारूकरण
- जनता को सार्वजनिक परिवहन, कारपूलिंग और मास्क के उपयोग की सलाह

2. दिल्ली-NCR में प्रदूषण की स्थिति क्यों बिगड़ रही है?

- वाहनों की संख्या और उत्सर्जन
- निर्माण गतिविधियों से धूल
- मौसम में बदलाव — ठंडी हवा और नमी से प्रदूषक फैल नहीं पाते
- आसपास के क्षेत्रों से प्रदूषण का प्रवाह

3. नागरिकों की भूमिका — Citizen Charter नागरिकों से अपेक्षा है:

- निजी वाहन की जगह सार्वजनिक परिवहन, मेट्रो, बस का उपयोग
- निर्माण स्थल पर धूल न उड़ने दें
- कचरा न जलाएं
- बाहर निकलते समय मास्क का उपयोग, बुजुर्ग और बच्चों की विशेष देखभाल
- शिकायतें प्रशासन को बताएं।



अक्टूबर 2026 | परिवहन विशेष समाचार पत्र

दिल्ली-NCR में वायु प्रदूषण — GRAP Stage I लागू

वायु गुणवत्ता खराब श्रेणी में, प्रदूषण रोकने के लिए सख्त कदम जरूरी

AQI MONITOR
POOR
वायु गुणवत्ता: खराब

CAQM
वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CAQM) द्वारा GRAP Stage I लागू

- पर प्रतिबंध
- वाहन प्रदूषण जांच सख्त
- निर्माण कार्य में धूल नियंत्रण
- डीजल जनरेटर पर प्रतिबंध
- जन जागरूकता और मास्क
- उपयोग की सलाह

संजय कुमार बाठला, प्रधान संपादक | पिंकी कुंडू, सह संपादक

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

"परिवहन विशेष समाचार पत्र की और स्वास्थ्य सम्बन्धी जागरूकता के प्रति विशेष संदेश

सीसा प्रदूषण : जन स्वास्थ्य पर मंडराता अदृश्य खतरा

लेखक अमरपाल सिंह वर्मा वरिष्ठ पत्रकार प्रस्तुतकर्ता विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र

संयुक्त राष्ट्र इस साल 18 से 24 अक्टूबर तक 'अंतरराष्ट्रीय सीसा जनित विषाक्तता रोकथाम सप्ताह' मना रहा है। इसका कारण लोगों को सीसे के खतरों के प्रति जागरूक करना और इसके संपर्क से बचने के तरीके बताना है।

मकानों के पेंट, खिलौनों, सौंदर्य प्रसाधनों, खाद्य पदार्थों और बर्तनों के जरिये शरीर में पहुंचने वाला सीसा स्वास्थ्य को गंभीर नुकसान पहुंचा सकता है।

मुश्किल यह है कि इसके दुष्प्रभाव हमेशा तुरंत दिखाई नहीं देते। जब तक उनका पता चलता है, तब तक नुकसान हो चुका हो सकता है।

भारत में सीसा प्रदूषण की चर्चा अभी तक नहीं होती जबकि इससे करोड़ों बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित होने का अंदेशा है।

डब्ल्यूएचओ के अनुसार सीसे के संपर्क का कोई ज्ञात सुरक्षित स्तर नहीं है।

बच्चों के लिए यह खास तौर पर खतरनाक है क्योंकि उनके मस्तिष्क का विकास जारी रहता है और सीसे का संपर्क इस प्रक्रिया को नुकसान पहुंचा सकता है।

यूनिसेफ और प्योर अर्थ संगठन की 2020 में प्रकाशित रिपोर्ट द टॉक्सिक ट्रुथ में इस समस्या के व्यापक पैमाने का अनुमान लगाया गया। रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया भर में लगभग 80 करोड़ बच्चों के खून में सीसे का स्तर प्रति डेसीलीटर पांच माइक्रोग्राम या इससे अधिक होने का अनुमान था।

रिपोर्ट में भारत के करीब 27.5 करोड़ बच्चों के भी सीसे के संपर्क में होने का अनुमान लगाया गया। ये आंकड़े सभी बच्चों की जांच के नतीजे नहीं हैं बल्कि उपलब्ध अध्ययनों और अनुमानों पर आधारित हैं। फिर भी इनसे समस्या के व्यापक होने का पता चलता है।

विशेषज्ञों के अनुसार सीसे का खतरा इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि हमारे आसपास मौजूद कई चीजों के जरिये यह शरीर में पहुंच सकता है।

पुराने मकानों की दीवारों पर लगा सीसा युक्त पेंट, कई खिलौनों और सौंदर्य प्रसाधनों में मौजूद सीसा तथा असुरक्षित औद्योगिक गतिविधियां इसके संपर्क का कारण बन सकती हैं।

पुरानी बैटरियों की असुरक्षित रीसाइक्लिंग करने वाली इकाइयों में काम करने वाले लोगों के साथ आसपास रहने वाले लोग भी खतरे में पड़ सकते हैं। ऐसी जगहों से निकलने वाली दूषित धूल और मिट्टी बच्चों के लिए खास तौर पर नुकसानदेह हो सकती है।

खाने-पीने की चीजों में सीसा मिलना खास तौर पर चिंताजनक है भारत में हल्दी को अधिक चमकीला पीला रंग देने के लिए लेड क्रोमेट जैसे जहरीले पदार्थ मिलाए जाने के मामले सामने आए हैं।

विभिन्न अध्ययनों के नतीजों ने इस समस्या की ओर ध्यान खींचा है। सीसे का नुकसान सिर्फ बच्चों तक सीमित नहीं है। यह शरीर में हीमोग्लोबिन बनने की प्रक्रिया में बाधा डाल सकता है और एनीमिया का जोखिम बढ़ा सकता है। लंबे समय तक इसके संपर्क में रहने से गुर्दों को नुकसान पहुंच सकता है, बीपी बढ़ सकता है और हृदय संबंधी बीमारियों का खतरा बढ़ सकता है।

गर्भावस्था के दौरान सीसे का संपर्क गर्भस्थ शिशु के विकास को प्रभावित कर सकता है। इससे गर्भपात और समय से पहले प्रसव का जोखिम भी बढ़ सकता है।



भारत में बड़ी संख्या में बच्चे कुपोषण और आयरन तथा कैल्शियम की कमी से जूझ रहे हैं। ऐसे बच्चों के लिए सीसे का खतरा और बढ़ सकता है क्योंकि इन पोषक तत्वों की कमी होने पर शरीर सीसे को अधिक मात्रा में अवशोषित कर सकता है। यानी जिन बच्चों को पहले ही पर्याप्त पोषण नहीं मिल रहा, वे सीसे के संपर्क से होने वाले नुकसान के प्रति अधिक संवेदनशील हो सकते हैं।

विशेषज्ञों की चिंता ये भी है कि सीसे के संपर्क से बच्चों की सीखने और समझने की क्षमता प्रभावित होने का अंदेशा है। इसका असर उनकी पढ़ाई और आगे चलकर रोजगार के अवसरों पर भी पड़ सकता है। नुकसान केवल बच्चे या उसके परिवार तक सीमित नहीं रहता।

वैश्विक संगठन प्योर अर्थ ने भारत में सीसे के संपर्क से होने वाले बौद्धिक नुकसान के आधार पर आर्थिक उत्पादकता में भारी कमी का अनुमान लगाया है।

इस तरह सीसा प्रदूषण स्वास्थ्य का ही नहीं बल्कि बच्चों के भविष्य और देश की अर्थ व्यवस्था से जुड़ा सवाल भी है।

देश में घरेलू और सजावटी पेंट में सीसे की मात्रा के लिए 90 पार्ट्स प्रति मिलियन (पीपीएम) की सीमा निर्धारित है।

बैटरी अपशिष्ट के प्रबंधन के लिए भी नियम बनाए गए हैं लेकिन नियम बनाना और उनका पालन कराना अलग-अलग बातें हैं।

पेंट में तय सीमा से अधिक सीसा होने, बैटरियों की असुरक्षित रीसाइक्लिंग और खाद्य पदार्थों में मिलावट पर कितनी प्रभावी निगरानी हो रही है, इसका पता नियमित जांच और सार्वजनिक किए जाने वाले आंकड़ों से ही चल सकता है लेकिन इस बारे में जानकारी का अभाव है।

सीसे के कारण स्वास्थ्य के प्रति मंडराते खतरे को देखते हुए लोगों को सीसे के खतरों और सुरक्षित उत्पादों की पहचान के बारे में बताना जरूरी है लेकिन सारी जिम्मेदारी उपभोक्ताओं पर नहीं डाली जा सकती।

सुरक्षित उत्पाद उपलब्ध कराना, उद्योगों की निगरानी करना, खाद्य पदार्थों में मिलावट रोकना और प्रदूषण से प्रभावित लोगों तथा बस्तियों की पहचान करना सरकार और संबंधित संस्थाओं की जिम्मेदारी है। उन्हें ही यह दायित्व निभाना चाहिए।

सीसे का असर अक्सर दिखाई देने से पहले ही बच्चों के विकास को नुकसान पहुंचा चुका होता है - इसलिए केवल इलाज पर निर्भर रहने के बजाय इसके संपर्क को रोकना जरूरी है।

अंतरराष्ट्रीय सीसा जनित विषाक्तता रोकथाम सप्ताह का महत्व तभी है, जब जागरूकता के साथ ठोस कार्रवाई भी हो। बाजार में बिकने वाले उत्पादों की नियमित जांच हो, नियम तोडने वाली इकाइयों के खिलाफ कार्रवाई की जाए और जांच के नतीजे सार्वजनिक किए जाएं।

यदि बच्चों को सीसे के नुकसान से बचाना है तो इसके लिए सरकार और संबंधित संस्थाओं को यह सुनिश्चित करना होगा कि नियम केवल कागजों तक सीमित न रहें। ऐसा होने पर ही अपेक्षित परिणाम मिल सकेंगे।

स्वस्थ भोजन, स्वस्थ जीवन- फिट है तो हिट है!

रोज़ फल, सलाद और पौष्टिक भोजन — सही पोषण से ही शरीर की हर कोशिका, हर अंग और हर प्रणाली बेहतर काम करती है

पिंकी कुंडू, सामाजिक परामर्शदाता

स्वस्थ भोजन कोई महंगा शौक नहीं, यह जीवन जीने की सरल कला है। जब हम शरीर को सही पोषण देते हैं, तो शरीर हमें ऊर्जा, स्वास्थ्य और खुशी लौटाता है। आज से ही आदत बदलिए — रोज़ फल, सलाद और पौष्टिक भोजन अपनाइए। क्योंकि फिट है तो हिट है!

तथ्य एक नज़र में

- सिद्धांत: भोजन ही शरीर का ईंधन है — जैसा भोजन, वैसा स्वास्थ्य
- आवश्यक पोषक तत्व: विटामिन, मिनरल, प्रोटीन, फाइबर, एंटी-ऑक्सीडेंट, स्वस्थ वसा और पानी
- प्रमुख स्रोत: फल, हरी सब्जियां, सलाद, दालें, अंकुरित अनाज, दूध-दही, मेवे
- हानिकारक आदतें: अत्यधिक तला-भुना, जंक फूड, चीनी युक्त पेय, पैकेज्ड स्नैक्स, अत्यधिक नमक
- परिणाम: सही पोषण से पाचन सुधरता है, इम्यूनिटी मजबूत होती है, ऊर्जा बनी रहती है और बीमारियों का खतरा घटता है

मुख्य बिंदु

- 1. शरीर एक कारखाना है: पाचन तंत्र भोजन को ऊर्जा और पोषक तत्वों में बदलता है — फल और सलाद से यह कारखाना सुचारू चलता है, जंक फूड से यह बोझिल हो जाता है
- २. फल और सलाद की शक्ति: विटामिन C, A, फाइबर और एंटी-ऑक्सीडेंट रोगों से बचाते हैं और पाचन को दुरुस्त रखते हैं
- ३. संतुलित थाली: हर भोजन में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, सब्जियां और फल का संतुलन जरूरी है
- 4. जंक फूड की चुनौती: बर्गर, चिप्स, कोल्ड ड्रिंक से सिर्फ पेट भरता है, पोषण नहीं — मोटापा, डायबिटीज, हृदय रोग का खतरा बढ़ता है
- 5. आदत आज से: हेल्दी आदतें बचपन से डालनी चाहिए — परिवार के साथ स्वस्थ भोजन करना सबसे बड़ी शुरुआत है।

विस्तृत विश्लेषण रिपोर्ट

1. पोषण का विज्ञान — शरीर को क्या चाहिए? शरीर को हर दिन ३ प्रकार के पोषक तत्व चाहिए:
- ऊर्जा देने वाले: कार्बोहाइड्रेट और स्वस्थ वसा — दलिया, दाल, चावल, मेवे
- बनाने और मरम्मत करने वाले: प्रोटीन — दाल, दूध, दही, पनीर, अंडा
- रक्षा करने वाले: विटामिन और मिनरल — फल, सलाद, हरी सब्जियां

जब यह तीनों संतुलन में मिलते हैं, तो शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली, मस्तिष्क, हड्डियां और मांसपेशियां सही काम करती हैं।



२. फल और सलाद क्यों जरूरी हैं?

- सेब, केला, संतरा, अमरूद, पपीता, अनार, अंगूर: विटामिन, फाइबर और प्राकृतिक शर्करा का स्रोत — पाचन और ऊर्जा के लिए उत्तम
- खीरा, टमाटर, गाजर, मूली, पालक: सलाद से पानी की कमी पूरी होती है, आंतों की सफाई होती है
- अंकुरित अनाज और दही: प्रोबायोटिक्स और प्रोटीन से पाचन तंत्र को लाभ
- दिन में एक बार सलाद: भोजन से पहले सलाद खाने से अधिक खाने की प्रवृत्ति घटती है और वजन नियंत्रित रहता है

३. अस्वस्थ भोजन का दुष्प्रभाव अस्वस्थ भोजन धीरे-धीरे शरीर को कमजोर करता है:

- मोटापा, ब्लड प्रेशर, शुगर का खतरा
- थकान, आलस्य और मानसिक तनाव
- त्वचा, बाल और दांतों पर नकारात्मक प्रभाव
- बच्चों में एकाग्रता की कमी और बीमारियां

जब हम हेल्दी भोजन खाते हैं, तो शरीर के अंदर के वर्कर खुशी से काम करते हैं, जब जंक फूड भेजते हैं तो वे परेशान हो जाते हैं।

4. स्वस्थ भोजन का जीवन पर प्रभाव

- शारीरिक: वजन संतुलित, हृदय स्वस्थ, हड्डियां मजबूत, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है
- मानसिक: मूड बेहतर, नींद अच्छी, याददाश्त तेज
- सामाजिक: परिवार के साथ भोजन करना भावनात्मक जुड़ाव बढ़ाता है
- आर्थिक: बीमारियों पर खर्च घटता है, काम करने की क्षमता बढ़ती है

5. जनहित में क्या करें?

- रोज़ एक-दो फल और एक कटोरी सलाद ज़रूर खाएं
- घर का बना ताज़ा भोजन प्राथमिकता दें
- दिनभर पर्याप्त पानी पिएं, सोडा और चीनी युक्त पेय से बचें
- स्कूल और कार्यालय में हेल्दी टिफिन की आदत डालें
- बच्चों को फल-सलाद का महत्व समझाएं, उन्हें जंक फूड की जगह हेल्दी विकल्प दें

संक्रमित दांत का इलाज- सिर्फ दांत नहीं, पूरे शरीर का स्वास्थ्य

सूजन घटेगी तो मेटाबोलिक स्वास्थ्य भी सुधरेगा — दांत का संक्रमण अब सिर्फ मुंह तक सीमित नहीं

पिंकी कुंडू सामाजिक परामर्शदाता

तथ्य एक नजर में

- स्रोत: Journal of Translational Medicine में प्रकाशित अध्ययन
- विषय: Apical Periodontitis — दांत की जड़ के आसपास के ऊतकों की सूजन
- अध्ययन: संक्रमित दांत के मरीजों के रक्त नमूनों का इलाज से पहले और इलाज के बाद तक विश्लेषण
- परिणाम: इलाज के बाद ग्लूकोज और पाइरूवेट में महत्वपूर्ण कमी, कोलेस्ट्रॉल और फैटी एसिड में अल्पकालिक कमी
- निष्कर्ष: दांत के संक्रमण का इलाज पूरे शरीर की सूजन को नियंत्रित करने में मदद कर सकता है।

मुख्य बिंदु

- 1. दांत से आगे का लाभ: संक्रमित दांत का इलाज सिर्फ प्राकृतिक दांत को बचाता नहीं, यह पूरे शरीर के स्वास्थ्य को भी लाभ देता है
- 2. सूजन का बोझ: दांत की जड़ के आसपास लगातार संक्रमण शरीर के कुल सूजन भार (Inflammatory Burden) को बढ़ाता है
- 3. मेटाबोलिक सुधार: इलाज के बाद रक्त में ग्लूकोज, पाइरूवेट और अन्य मेटाबोलाइट्स में बदलाव देखा गया जो मेटाबोलिक स्वास्थ्य से जुड़े हैं
- 4. निरंतर शोध: अभी और शोध की आवश्यकता है, पर यह संबंध अब वैज्ञानिक जांच का विषय बन चुका है

विस्तृत विश्लेषण

1. दांत की जड़ का संक्रमण — अदृश्य सूजन जब दांत की जड़ के आसपास संक्रमण होता है, तो दर्द या सूजन सिर्फ मुंह में नहीं रहती। यह धीरे-धीरे शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को लगातार सक्रिय रखती है। इसी लगातार सूजन को वैज्ञानिक 'सिस्टमिक इंफ्लेमेशन' कहते हैं।

2. इलाज क्यों जरूरी है? एंडोडोंटिक उपचार (रूट कैनाल) से संक्रमण समाप्त होता है। अध्ययन में पाया गया कि इलाज के बाद दो वर्ष तक रक्त में ग्लूकोज और पाइरूवेट के स्तर में कमी आई। साथ ही कोलेस्ट्रॉल और फैटी एसिड में भी अल्पकालिक सुधार देखा गया। इसका अर्थ है — दांत का इलाज मेटाबोलिक संतुलन में सहायक हो सकता है।

3. मेटाबोलिक स्वास्थ्य और दांत का संबंध ग्लूकोज, कोलेस्ट्रॉल और फैटी एसिड — ये सभी हमारे मेटाबोलिज्म की धुरी हैं। जब दांत के संक्रमण के कारण शरीर में सूजन रहती है, तो इनका संतुलन बिगड़ सकता है। इलाज से सूजन कम होने पर शरीर को राहत मिलती है।

4. जनहित में क्या करें?

- दांत दर्द, मसूड़ों की सूजन या लंबे समय से मुंह की दुर्गंध को नजरअंदाज न करें
- नियमित दंत जांच कराएं
- संक्रमण होने पर समय पर इलाज कराएं, दांत निकालने से पहले बचाने का प्रयास करें
- मुंह का स्वास्थ्य पूरे शरीर के स्वास्थ्य का हिस्सा है — इसे सिर्फ सौंदर्य का विषय न समझें



संपादकीय टिप्पणी : दांत का इलाज अब सिर्फ दांत तक सीमित नहीं रहा। यह सूजन को नियंत्रित करता है, हीलिंग को समर्थन देता है और पूरे शरीर की सेहत को मजबूत करता है। इसलिए दांत के संक्रमण को हल्के में न लें — समय पर इलाज ही स्वस्थ जीवन की कुंजी है।

बुढ़ापे में हड्डियों की सुरक्षा, आत्मनिर्भर जीवन की कुंजी

डॉ. विजय गर्ग

बढ़ती उम्र जीवन का स्वाभाविक सत्य है, लेकिन उम्र बढ़ने के साथ शारीरिक रूप से कमजोर होना या दूसरों पर निर्भर हो जाना अनिवार्य नहीं है। स्वस्थ जीवनशैली, संतुलित आहार और नियमित शारीरिक गतिविधियों के माध्यम से वृद्धावस्था को स्वस्थ, सक्रिय और सम्मानजनक बनाया जा सकता है। इस दिशा में हड्डियों का स्वास्थ्य विशेष महत्त्व रखता है। मजबूत हड्डियाँ व्यक्ति को चलने-फिरने, दैनिक कार्य करने और आत्मनिर्भर जीवन जीने में सहायता करती हैं।

उम्र बढ़ने के साथ हड्डियों का घनत्व धीरे-धीरे कम हो सकता है। जब हड्डियाँ कमजोर और भंगुर हो जाती हैं, तो इस स्थिति को ऑस्टियोपोरोसिस कहा जाता है। इस बीमारी में मामूली गिरावट या हल्की चोट से भी हड्डी टूटने का खतरा बढ़ जाता है। विशेष रूप से कूल्हे, रीढ़ की हड्डी और कलाई में फ्रैक्चर वृद्ध व्यक्तियों की गतिशीलता तथा स्वतंत्रता को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकते हैं।

ऑस्टियोपोरोसिस को अक्सर एक ऐसी बीमारी माना जाता है, जिसके लक्षण तब दिखाई देते हैं जब हड्डी टूट जाती है। वास्तव में, हड्डियों का कमजोर होना लंबे समय तक बिना किसी स्पष्ट लक्षण के जारी रह सकता है। इसलिए केवल दर्द होने पर ही हड्डियों की जाँच करवाने की प्रतीक्षा करना उचित नहीं है। जोखिम के अनुसार समय पर चिकित्सकीय सलाह और हड्डियों के घनत्व की जाँच से बीमारी की पहचान तथा उपचार में मदद मिल सकती है।

संतुलित आहार हड्डियों की मजबूती का आधार है। कैल्शियम हड्डियों के निर्माण और रखरखाव के लिए आवश्यक खनिज है। दूध, दही, पनीर, रागी, तिल, कुछ हरी पत्तेदार सब्जियाँ और कैल्शियम से भरपूर अन्य खाद्य पदार्थ इसके अच्छे स्रोत हो सकते हैं। विटामिन डी शरीर में कैल्शियम के अवशोषण में मदद करता है। धूप, आहार और आवश्यकता पड़ने पर चिकित्सकीय सलाह से लिए गए पूरक पदार्थ विटामिन डी की जरूरत पूरी करने में सहायक हो सकते हैं। पर्याप्त प्रोटीन भी मांसपेशियों और हड्डियों के स्वास्थ्य के लिए जरूरी है।

केवल पौष्टिक भोजन करना पर्याप्त नहीं है। नियमित शारीरिक गतिविधि भी हड्डियों और मांसपेशियों को मजबूत बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पैदल चलना, अपनी क्षमता के अनुसार सीढ़ियाँ चढ़ना, हल्के प्रतिरोध वाले व्यायाम और संतुलन सुधारने वाले अभ्यास उपयोगी हो सकते हैं। हालांकि, जिन लोगों को पहले से ऑस्टियोपोरोसिस, रीढ़ की कमजोरी या फ्रैक्चर की समस्या है, उन्हें व्यायाम शुरू करने से पहले चिकित्सकीय सलाह लेनी चाहिए। ऐसे व्यक्तियों को अचानक झुकने, भारी वजन उठाने और रीढ़ पर अत्यधिक दबाव डालने वाली गतिविधियों से बचने की आवश्यकता हो सकती है।

हड्डियों की सुरक्षा के साथ-साथ गिरने से बचाव भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। वृद्धावस्था में गिरने की घटनाएँ गंभीर फ्रैक्चर का प्रमुख कारण बन सकती हैं। घर में फिसलन वाले फर्श, ढीली कालीनें, अंधेरी सीढ़ियाँ और रास्ते में बिखरा सामान दुर्घटनाओं का खतरा बढ़ाते हैं। बाथरूम में पकड़ने के लिए रेलिंग लगाना, पर्याप्त रोशनी रखना, सीढ़ियों पर मजबूत रेलिंग उपलब्ध कराना और जरूरत के अनुसार सहायक छड़ी या वॉकर का उपयोग करना सुरक्षा बढ़ा सकता है। आँखों की नियमित जाँच तथा ऐसी दवाओं की चिकित्सकीय समीक्षा, जिनसे चक्कर या असंतुलन हो सकता है, भी उपयोगी है।

महिलाओं में रजोनिवृत्ति के बाद एस्ट्रोजन हार्मोन का स्तर कम होने के कारण हड्डियों का क्षय तेजी से हो सकता है। इसलिए महिलाओं को विशेष रूप से अपने हड्डियों के स्वास्थ्य के प्रति सजग रहना चाहिए। हालांकि, ऑस्टियोपोरोसिस केवल महिलाओं की समस्या नहीं है। पुरुषों में भी बढ़ती उम्र, कुछ बीमारियों, पोषण की कमी और कुछ दवाओं के कारण हड्डियाँ कमजोर हो सकती हैं। जिन लोगों के परिवार में ऑस्टियोपोरोसिस का इतिहास है, जिन्हें पहले मामूली चोट से फ्रैक्चर हो चुका है या जो लंबे समय तक स्टेरॉयड दवाएँ लेते हैं, उन्हें विशेष सतर्कता बरतनी चाहिए।

तंबाकू का सेवन और अत्यधिक शराब पीना हड्डियों के स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचा सकते हैं। इसलिए इनसे बचना तथा पर्याप्त नींद, संतुलित आहार और नियमित दिनचर्या अपनाना लाभकारी है। यदि पीठ में लगातार दर्द हो, लंबाई कम होने लगे, शरीर का झुकाव बढ़े या मामूली चोट से हड्डी टूट जाए, तो चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए। जोखिम वाले व्यक्तियों में बोन मिनरल डेंसिटी की जाँच, विशेषकर डेक्सा (DEXA) स्कैन, की आवश्यकता चिकित्सक निर्धारित कर सकते हैं। ऑस्टियोपोरोसिस की पुष्टि होने पर केवल कैल्शियम की गोलियों पर निर्भर रहने के बजाय उचित उपचार लेना जरूरी है।

परिवार और समाज की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण है। वृद्ध व्यक्तियों को केवल देखभाल की आवश्यकता वाले लोगों के रूप में नहीं देखना चाहिए, बल्कि उन्हें अपनी स्वतंत्रता बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। सुरक्षित वातावरण, नियमित स्वास्थ्य जाँच, पौष्टिक भोजन और शारीरिक गतिविधियों के अवसर उन्हें सक्रिय जीवन जीने में मदद करते हैं।

अंततः, हड्डियों की सुरक्षा केवल फ्रैक्चर से बचने का उपाय नहीं, बल्कि आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता और जीवन की गुणवत्ता बनाए रखने का आधार है। बढ़ती उम्र को कमजोरी का पर्याय मानने के बजाय स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने का अवसर समझना चाहिए। सही जानकारी, समय पर जाँच, उचित उपचार और नियमित व्यायाम के माध्यम से ऑस्टियोपोरोसिस के जोखिम को कम किया जा सकता है।

मजबूत हड्डियाँ स्वस्थ बुढ़ापे की नींव हैं। आज अपनाई गई सावधानियाँ कल की स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता को सुरक्षित बना सकती हैं।

डॉ. विजय गर्ग
सेवानिवृत्त प्राचार्य। प्रख्यात वैज्ञानिक स्ट्रीट कौर चंद, एम.एच.आर., मलोट, पंजाब – 152107

भक्ति, साधना और समर्पण का संगम बनी माँ विंध्यवासिनी ट्रस्ट की नवदिवसीय भजन श्रृंखला



परिवहन विशेष न्यूज

लखनऊ। शारदीय नवरात्रि के पावन अवसर पर माँ विंध्यवासिनी ट्रस्ट लोक जागृति कार्यशाला समिति, लखनऊ द्वारा 11 अक्टूबर से 19 अक्टूबर 2026 तक नवदिवसीय भजन श्रृंखला का आयोजन किया गया। इस आध्यात्मिक आयोजन में देश के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े 40 प्रतिभागियों ने अपनी सहभागिता के माध्यम से माँ भगवती के प्रति श्रद्धा, भक्ति और समर्पण व्यक्त किया।

माँ विंध्यवासिनी ट्रस्ट की ओर से प्रतिभागियों को 'श्री आदिशक्ति सम्मान' प्रदान कर सभी का उत्साहवर्धन किया गया।

इस आयोजन का उद्देश्य माँ आदिशक्ति की महिमा का गुणगान करने के साथ-साथ सनातन संस्कृति, आध्यात्मिक मूल्यों और भक्ति परंपरा को प्रोत्साहित करना था। प्रतिभागियों ने भक्तिमय भजनों के माध्यम से नवरात्रि के आध्यात्मिक वातावरण को और अधिक भावपूर्ण बनाया।

इस नवदिवसीय भजन श्रृंखला में सहभागिता करने वाले प्रतिभागी

चेतना शुक्ला, डॉ. नीलू सक्सेना कस्तूरी, शोभा सतीश पाठक, सरोज बिलोनियां, मोनिका ममता रथ रायपुर (छत्तीसगढ़), नमिता पाण्डे, आशा बिसारिया चंदौसी, पार्वती यादव, किरण त्रिपाठी, चंद्रकला दुबे, आँचल जैन, उषा पांडे (लखनऊ), देविका श्रीवास्तव, डॉ. मीना कुमारी परिहार 'मान्या', प्रो. शरद नारायण खरे, अमिता तिवारी, डॉ. किरण कुमारी (भागलपुर), आशा अग्निहोत्री, अनीता उपाध्याय, रामकुमार पटेल (बिलासपुर, छत्तीसगढ़), चंदा मिश्रा, कल्पना सक्सेना, बृज किशोरी त्रिपाठी, पुष्पा निर्मल जी सुधा द्विवेदी, डॉ. शशि जायसवाल (प्रयागराज, उत्तर प्रदेश), शोभना वर्मा (लखनऊ), कवि कुमार निर्मल, दीपा दीक्षित, पद्मा प्रसाद 'विन्देश्वरी', ईश्वर चंद्र जायसवाल, अंजनी कुमार चतुर्वेदी, वैशाली रस्तोगी तथा डॉ. साधना मिश्रा लखनवी।संस्था की अध्यक्षा श्रीमती साधना मिश्रा 'विंध्य' ने कहा कि भजन और भक्ति भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर हैं। ऐसे आयोजन न केवल आध्यात्मिक चेतना को जागृत करते हैं, बल्कि समाज में प्रेम, सद्भाव, सकारात्मकता और सांस्कृतिक एकता को भी बढ़ावा देते हैं। उन्होंने सभी प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

माँ विंध्यवासिनी ट्रस्ट लोक जागृति कार्यशाला समिति भविष्य में भी साहित्यिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक गतिविधियों के माध्यम से समाज में जागरूकता तथा भारतीय परंपराओं के प्रति सम्मान बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है।

आपके दिन की शुरुआत, पारुल भटनागर के साथ
विशेषज्ञ एस्ट्रो न्यूमेरो वास्तु कंसल्टेंट
परिवहन विशेष News

धन और रिश्तों का दैनिक अंक ज्योतिष भविष्यफल

जानिए दिन की ऊर्जा • संभालिए धन • मजबूत बनाइए रिश्ते

22 अक्टूबर 2026 | दिन का अंक: 6 — जिम्मेदारी, सामंजस्य, प्रेम, देखभाल और स्थिरता

मूलांक 1

धन व करियर: दिन का अंक 6 आपकी स्वतंत्र प्रकृति को जिम्मेदारी और संवेदनशीलता के साथ नेतृत्व करने को कहता है। क्लाइंट की देखभाल, टीम सहयोग या दीर्घकालिक सुरक्षा बढ़ाने वाला व्यावहारिक निर्णय प्रगति दे सकता है।

रिश्ते: आज आपकी मजबूत व्यक्तित्व ऊर्जा को नरम रवैये से लाभ होगा। अपनापन सीधे दिखाएं और साझा निर्णयों में सामने वाले को शामिल करें।

सावधानी: नियंत्रण, प्रतिष्ठा के लिए खर्च और केवल आर्थिक सुविधा को भावनात्मक देखभाल मान लेने से बचें।

दिन बेहतर बनाएं: गर्मजोशी के साथ नेतृत्व करें और ऐसा जिम्मेदार कदम लें जो सबके लिए उपयोगी हो।

मूलांक 2

धन व करियर: दिन 6 आपकी सहयोगी प्रकृति को समर्थन देता है और साझेदारी, सेवा तथा परिवार से जुड़ी आर्थिक योजना के लिए अच्छा है। समझौते स्पष्ट रखें ताकि दयालुता आर्थिक बोझ न बने।

रिश्ते: भावनात्मक निकटता प्रमुख रहेगी। अपनापन खुलकर व्यक्त करें, लेकिन अपनी शांति को लगातार आश्वासन पर निर्भर न करें।

सावधानी: सबको खुश करने, भावनात्मक खर्च और हर मूड बदलाव को व्यक्तिगत लेने से बचें।

दिन बेहतर बनाएं: सहयोग दें, लेकिन एक स्वस्थ व्यक्तिगत सीमा बनाए रखें।

मूलांक 3

धन व करियर: दिन 6 रचनात्मकता को जिम्मेदारी से जोड़ता है। संवाद, डिजाइन, शिक्षण, हॉस्पिटैलिटी या प्रस्तुति से जुड़े काम तब लाभ देंगे जब सुंदरता के साथ व्यावहारिक मूल्य भी हो।

रिश्ते: प्यार और अभिव्यक्ति सहज रहेंगे। सच्ची प्रशंसा रिश्ते को मजबूत करेगी, लेकिन वादे व्यावहारिक रखें।

सावधानी: दिखावे, मनोरंजन या प्रभावित करने के लिए जरूरत से ज्यादा खर्च से बचें।

दिन बेहतर बनाएं: रचनात्मकता से कुछ उपयोगी, सुंदर और टिकाऊ बनाएं।

मूलांक 4

धन व करियर: दिन 6 सुरक्षा, पारिवारिक जिम्मेदारियों और व्यावहारिक आराम पर ध्यान लाता है। घर के खर्च, कार्य प्रणाली या लंबी अवधि की प्रतिबद्धताओं की समीक्षा करके जरूरी आधार मजबूत करें।

रिश्ते: आपकी विश्वसनीयता महत्वपूर्ण है, लेकिन अपनों को गर्मजोशी और शब्दों में आश्वासन भी चाहिए। केवल कर्तव्य को भावनात्मक उपस्थिति का विकल्प न बनाएं।

सावधानी: कठोरता, आलोचना और हर जिम्मेदारी अकेले उठाने से बचें।

दिन बेहतर बनाएं: एक व्यावहारिक विषय व्यवस्थित करें और प्रशंसा स्पष्ट शब्दों में व्यक्त करें।

मूलांक 5

धन व करियर: दिन 6 आपकी तेज ऊर्जा को प्रतिबद्धताओं का सम्मान करने को कहता है। क्लाइंट, नेटवर्किंग या सेवा से जुड़े अवसर तब बढ़ेंगे जब आप दिशा जल्दी बदलने के बजाय काम पूरा करेंगे।

रिश्ते: स्वतंत्रता और निकटता दोनों महत्वपूर्ण हैं। योजनाएं स्पष्ट रखें और बिना बंधन महसूस किए साझा समय के लिए जगह बनाएं।

सावधानी: अचानक खरीदारी, अस्पष्ट संकेत और दिनचर्या से ऊबकर जिम्मेदारी से बचने से बचें।

दिन बेहतर बनाएं: विविधता का आनंद लें, लेकिन नया शुरू करने से पहले एक वादा पूरा करें।

मूलांक 6

धन व करियर: आपके मूलांक 6 और दिन के अंक 6 की ऊर्जा एक-दूसरे को बहुत मजबूत करती है। धन, आराम, जिम्मेदारी, परिवार और सौंदर्य से जुड़े विषय प्रमुख रहेंगे। गुणवत्ता बढ़ाएं, लेकिन उदारता को बजट में रखें।

रिश्ते: प्रेम, सामंजस्य और प्रतिबद्धता की ऊर्जा मजबूत है। एक विचारशील कदम या सच्ची बातचीत महत्वपूर्ण रिश्ते को गहरा कर सकती है।

सावधानी: अधिकार भावना, जरूरत से ज्यादा देने और अपनों के लिए क्षमता से अधिक खर्च से बचें।

दिन बेहतर बनाएं: सामंजस्य बनाएं, लेकिन हर व्यक्ति की खुशी की जिम्मेदारी स्वयं न लें।

मूलांक 7

धन व करियर: दिन 6 आपकी गहरी सोच के बीच व्यावहारिक जिम्मेदारियां सामने लाता है। खरीद या प्रतिबद्धताओं की जांच करें, लेकिन उपयोगी सलाह और रोजमर्रा की जिम्मेदारियों से स्वयं को अलग न करें।

रिश्ते: आपको शांति चाहिए हो सकती है, जबकि अपनों को आश्वासन चाहिए। अपनी स्पेस की जरूरत बताएं और अपनापन दिखाने का सरल संकेत दें।

सावधानी: भावनात्मक दूरी, अत्यधिक विश्लेषण और व्यावहारिक जिम्मेदारियां नजरअंदाज करने से बचें।

दिन बेहतर बनाएं: एकांत और जुड़ाव के बीच संतुलन बनाएं।

मूलांक 8

धन व करियर: दिन 6 धन, लोगों और दीर्घकालिक सुरक्षा के जिम्मेदार प्रबंधन को बढ़ाता है। आपकी अधिकार क्षमता तब बेहतर परिणाम देगी जब उद्देश्य नियंत्रण नहीं, बल्कि स्थिरता की रक्षा हो।

रिश्ते: परिवार या साझेदारी की जिम्मेदारियां ध्यान मांग सकती हैं। भावनात्मक विषय में निर्देश देने से पहले सामने वाले की बात सुनें।

सावधानी: प्रभुत्व, काम में अत्यधिक डूबना और रिश्तों में धन को दबाव के रूप में उपयोग करने से बचें।

दिन बेहतर बनाएं: अपनी शक्ति से सुरक्षा बनाएं, दबाव नहीं।

मूलांक 9

धन व करियर: दिन 6 आपकी उदार ऊर्जा को व्यावहारिक सेवा की ओर ले जाता है। जहां वास्तव में जरूरत हो मदद करें, लेकिन पहले अपने संसाधन सुरक्षित रखें और अपनी जिम्मेदारियां पूरी करें।

रिश्ते: करुणा और क्षमा की ऊर्जा मजबूत है। जरूरी सीमाओं को छोड़े बिना गलतफहमी को ठीक किया जा सकता है।

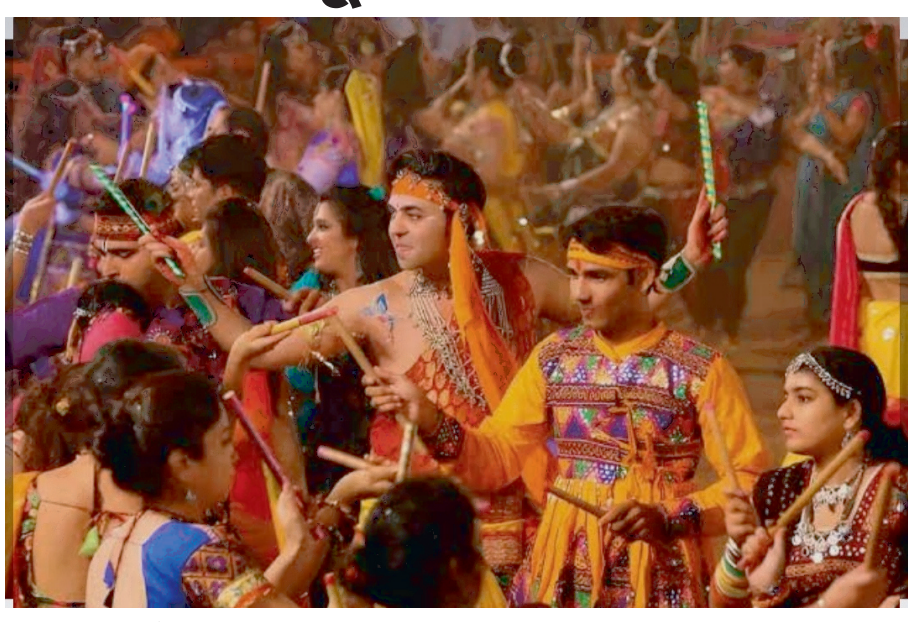
सावधानी: अपराधबोध में देने, हर किसी को बचाने और पुराने भावनात्मक बोझ को ढोने से बचें।

दिन बेहतर बनाएं: समझदारी से दें और एक अधूरे विषय को शांतिपूर्ण समाधान की ओर ले जाएं।

कॉल / व्हाट्सऐप: 8750075550 | वेबसाइट: www.vediccodes.in | @vediccodes

Vediccodes - Your vibrations... our solutions

नव श्री केशव रामलीला द्वारा आयोजित डांडिया नाईट में देर रात तक झूमी महिलाएं व बच्चे



परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली: राजधानी दिल्ली के रोहिणी स्थित जापानी पार्क, सेक्टर 11 के सामने नव श्री केशव रामलीला कमेटी के समापन पर आयोजित डांडिया नाईट में देर रात तक झूमी महिलाएं व बच्चें। इस अवसर पर नव श्री केशव रामलीला कमेटी के चेयरमैन पुष्पेन्द्र रस्तोगी ने कहा कि आज के श्री राम जी के राजतिलक के साथ ही रामलीला का समापन हुआ, रामलीला करने का अर्थ सही मायने में श्री राम के आदर्शों को जीवन में उतारना है। उन्होने कहा कि श्री राम आज भी हमारे आदर्श हैं और आज के नवयुवकों को श्री राम के आदर्श जीवन में उतारना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि इस तरह के सामूहिक आयोजन करने से महिला सशक्तिकरण को बल मिलता है। कार्यक्रम में डांडिया नाईट का भी आयोजन किया गया था, जिसमें लोग घंटों झूमते रहे।

डांडिया नाईट के अवसर पर मशहूर घीरज भंडारी व गुंजन रस्तोगी जैसे ही स्टेज पर आए उपस्थित लोगों ने जोरदार तालियों से उनका स्वागत किया। दोनों ने डांड़िया के मषहूर गीत रंगलों म्हारो डोलना अरर अरर..... उड़ी उड़ी जाए उड़ी जाए दिल की पंतग लेके..... हे नाम रे सबसे बड़ा तेरा नाम ओ शेरावाली..... ढ़ोल वाजे..... गीत गाकर छोटे बच्चों से लेकर बड़ो तक ने डांड़िया का आनंद लिया। धीरज भंडारी व गुंजन रस्तोगी को संस्था के सदस्यों द्वारा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित भी किया गया।

इस अवसर पर संस्था चेयरमैन पुष्पेन्द्र रस्तोगी, अध्यक्ष जय किशन बंसल, एडिशनल चेयरमैन संजय कुमार गुप्ता, महामंत्री कृष्ण जिंदल, लीला मंत्री हरि किशन मित्तल, कोषाध्यक्ष दिनेश सर्राफ सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

काशी दुर्गोत्सव समिति की 66 वर्षों की गौरवशाली परंपरा के बीच बंगाली संस्कृति और धार्मिक आस्था की दिखी अनुपम झलक

सिंदूर खेला के साथ मां दुर्गा को दी गई भावपूर्ण विदाई,डॉ.नोविना चक्रवर्ती ने बताया परंपरा का महत्व

(संतोष कुमार सिंह)
परिवहन विशेष समाचार पत्र

वाराणसी:- काशी दुर्गोत्सव समिति की ओर से बुधवार को चेतसिंह किला,हरिश्चंद्र रोड शिवाला में पारंपरिक सिंदूर खेला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ.नोविना चक्रवर्ती ने सिंदूर खेला के धार्मिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए इसे बंगाली संस्कृति और दुर्गापूजा की एक महत्वपूर्ण परंपरा बताया। आयोजन के दौरान श्रद्धा, उल्लास और भावनाओं से ओतप्रोत वातावरण में मां दुर्गा को विदाई दी गई। सिंदूर खेला की परंपरा के तहत महिलाओं ने सर्वप्रथम मां दुर्गा को सिंदूर अर्पित कर परिवार की सुख-समृद्धि,सौभाग्य और खुशहाली की कामना की इसके बाद महिलाओं ने एक-दूसरे को सिंदूर लगाकर मंगलकामनाएं दीं। मां दुर्गा की विदाई के इस भावुक क्षण में श्रद्धालुओं की आस्था और बंगाली संस्कृति की खूबसूरत झलक देखने को मिली।

डॉ.नोविना चक्रवर्ती ने सिंदूर खेला की महत्ता बताते हुए कहा कि यह परंपरा महिलाओं के सौभाग्य,सुख-समृद्धि और आपसी प्रेम का प्रतीक है इसके माध्यम से मां दुर्गा के प्रति श्रद्धा व्यक्त करने के साथ ही सामाजिक सौहार्द,पारिवारिक मंगलकामना और सांस्कृतिक विरासत को भी सहेजा जाता है। गौरतलब है कि काशी दुर्गोत्सव समिति पिछले 66 वर्षों से लगातार दुर्गापूजा का आयोजन कर रही है वर्षों से चली आ रही यह परंपरा काशी में बंगाली संस्कृति और धार्मिक विरासत को जीवंत बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। नवरात्र के दौरान समिति के पूजा पंडाल में प्रतिदिन बड़ी संख्या में श्रद्धालु मां दुर्गा के दर्शन-पूजन के लिए पहुंचे। समिति की ओर से आयोजित भोग एवं प्रसाद वितरण कार्यक्रम में प्रतिदिन लगभग 500 से 1500 श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया। इस वर्ष चार दिनों तक श्रद्धालुओं के बीच भोग एवं प्रसाद का वितरण किया गया।



समिति के अध्यक्ष अशोक कांति चक्रवर्ती,जनरल सेक्रेटरी अभिजीत चौधरी,भोग सेक्रेटरी मनीष भट्टाचार्य,कानू मुखर्जी एवं प्रसून भट्टाचार्य हैं। वहीं मीडिया प्रभारी अविनाश भट्टाचार्य, स्मारिका प्रभारी चैताली भट्टाचार्य तथा कोषाध्यक्ष आशीष दास गुप्ता समिति के आयोजन एवं व्यवस्थाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

काशी दुर्गोत्सव समिति की 66 वर्षों की यह गौरवशाली परंपरा धार्मिक आस्था,सामाजिक एकजुटता और सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक बनी हुई है। सिंदूर खेला के साथ मां दुर्गा को दी गई विदाई ने श्रद्धालुओं के मन में भक्ति,भावुकता और अगले वर्ष मां के पुनः आगमन की उम्मीद को और प्रगाढ़ कर दिया।।

प्रगति एवं पीएमजी मामलों के समाधान में झज्जर प्रशासन सजग : डीसी

डीसी वर्षा खांगवाल ने संबंधित अधिकारियों को दिए नियमित मॉनिटरिंग के निर्देश

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 21 अक्टूबर

जिला से संबंधित प्रगति एवं पीएमजी मामलों की समीक्षा को लेकर बुधवार को डीसी वर्षा खांगवाल ने अधिकारियों की बैठक ली। बैठक में प्रगति एवं पीएमजी मामलों में झज्जर प्रशासन द्वारा निभाई जा रही जिम्मेदारी पर संतोष जताया गया और कहा कि इस प्रकार के प्रोजेक्ट को लेकर प्रशासन सजग है। बैठक में संबंधित मामलों की वर्तमान स्थिति, अब तक की गई कार्रवाई तथा इनके समाधान की दिशा में हुई प्रगति की विस्तार से समीक्षा भी की गई।

डीसी वर्षा खांगवाल ने संबंधित अधिकारियों के साथ मामलों की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि प्रगति एवं पीएमजी से संबंधित मामलों को प्राथमिकता के आधार पर लेते हुए निर्धारित समय सीमा में आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित की जा रही है और इसकी नियमित मोनिटरिंग भी की जाए। उन्होंने कहा कि विकास परियोजनाओं और जनहित से जुड़े मामलों के समाधान में किसी भी स्तर पर अनावश्यक देरी नहीं होनी चाहिए।



डीसी ने कहा कि जिन मामलों के समाधान में एक से अधिक विभागों अथवा एजेंसियों की भूमिका है, उनमें आपसी समन्वय स्थापित करते हुए कार्रवाई को आगे बढ़ाया जाए। संबंधित अधिकारी अपने-अपने विभाग से जुड़े मामलों की नियमित समीक्षा करें और प्रगति की अद्यतन स्थिति से उच्च अधिकारियों को अवगत करवाएं। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रत्येक लंबित मामले के समाधान के लिए स्पष्ट कार्ययोजना तैयार करते हुए समयबद्ध तरीके से कार्रवाई की जाए। साथ ही, जिन मामलों में किसी प्रकार की बाधा आ रही है, उसका तत्काल समाधान सुनिश्चित किया जाए, ताकि विकास कार्यों को गति मिल सके।

मच्छर जनित बीमारियों से बचाव को लेकर बरतें सावधानी : डीसी

डीसी वर्षा खांगवाल ने झज्जर जिला वासियों से किया आह्वान



झज्जर, 21 अक्टूबर। डेंगू से बचाव का सबसे प्रभावी उपाय मच्छरों की रोकथाम तथा उनके प्रजनन स्थलों को समाप्त करना है। इसके लिए आमजन की सक्रिय भागीदारी बेहद जरूरी है। डीसी वर्षा खांगवाल ने जिला के नागरिकों से आह्वान किया है कि वे मच्छरों से होने वाली बीमारियों, विशेषकर डेंगू से बचाव के लिए स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी सावधानियों का पालन करें।

डीसी वर्षा खांगवाल ने जनहित में जानकारी देते हुए बताया कि नागरिक घर से बाहर निकलते समय पूरे शरीर को ढकने वाले कपड़े पहनें तथा आवश्यकता के अनुसार मच्छरदानी का प्रयोग करें। दिन के समय भी मच्छरों से बचाव जरूरी है, क्योंकि डेंगू फैलाने वाला मच्छर दिन के समय भी सक्रिय रहता है। नागरिक मच्छर भगाने वाले साधनों का भी उचित प्रयोग करें। घरों, कार्यालयों और आसपास के क्षेत्रों में कहीं भी पानी जमा न होने दें। कूलर, गमले, टायर, छतों पर रखे बर्तन, टंकियों तथा अन्य ऐसे स्थानों की नियमित सफाई करें, जहां पानी एकत्रित हो सकता है। स्वच्छ एवं सूखा वातावरण बनाए रखकर मच्छरों के प्रजनन को काफी हद तक रोका जा सकता है। डीसी ने कहा कि मच्छरों से बचाव के उपाय अपनाएं और अपने परिवार को डेंगू से सुरक्षित रखें। जिला प्रशासन द्वारा स्वास्थ्य विभाग के साथ मिलकर डेंगू व अन्य मच्छर जनित बीमारियों की रोकथाम के लिए आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं।

तेज सिरदर्द, शरीर में दर्द, आंखों के पीछे दर्द जैसे लक्षण मिलने पर डॉक्टर से करें संपर्क

सिविल सर्जन डॉ मंजू कादयान ने बताया कि किसी व्यक्ति को बुखार, तेज सिरदर्द, शरीर में दर्द, आंखों के पीछे दर्द, जी मिचलाना अथवा त्वचा पर लाल चकत्ते जैसे लक्षण दिखाई देने पर स्वयं दवा लेने के बजाय चिकित्सक से परामर्श लें। डेंगू की रोकथाम के लिए स्वास्थ्य विभाग द्वारा चलाए जा रहे जागरूकता एवं जांच अभियान में आमजन सहयोग करें।

वायु प्रदूषण नियंत्रण को लेकर प्रशासन सजग : डीसी

एनजीटी की गाइडलाइन की अवहेलना को सख्ती से निपटें अधिकारी
डीसी वर्षा खांगवाल ने एनजीटी की ग्रेप व्यवस्था को पूर्ण ढंग से लागू करने के अधिकारियों को दिए निर्देश
पर्यावरण को दूषित करने वाली गतिविधियों की समीर एप पर करें शिकायत



झज्जर, 21 अक्टूबर।

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि जिला में वायु प्रदूषण नियंत्रण को लेकर प्रशासन सजग है। सभी संबंधित विभाग पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूकता के साथ इससे जुड़े कार्यों का क्रियान्वयन सही समय पर सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि एनजीटी द्वारा वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए ग्रेप व्यवस्था लागू की है। इसकी पालना प्रभावी ढंग से करनी होगी। पर्यावरण संरक्षण की मुहिम को सक्रिय रूप से आगे बढ़ाने के लिए समीर एप शुरू किया गया है। कोई भी नागरिक ग्रेप प्रणाली की अवहेलना या अन्य गतिविधि जो पर्यावरण को दूषित कर रही हैं, उनकी शिकायत समीर एप पर की जा सकती है।

डीसी ने कहा कि ग्रेप के प्रथम चरण के नियमों की कड़ाई से पालना करने के लिए प्रभावी कदम उठाए जाएं ताकि वायु प्रदूषण को नियंत्रित किया जा सके। उन्होंने फसल अवशेष प्रबंधन को लेकर भी सरकार की योजनाओं का किसानों से लाभ उठाने का आह्वान किया, साथ ही अधिकारियों से फसल अवशेष जलाने वालों पर कड़ी निगरानी के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सड़कों पर उड़ने वाली धूल पर नियंत्रण के लिए संबंधित विभागों द्वारा एंटी स्मॉक गन को उपयोग में लाया जाए, साथ ही वायु प्रदूषण को लेकर प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा जारी नियमों की कड़ाई से पालना सुनिश्चित की जाए।

डीसी ने अधिकारियों को दिशा-निर्देश देते हुए कहा कि अधिकारी एक्शन प्लान बनाकर प्रदूषण मुक्त शहर बनाने का हर सम्भव प्रयास करें और मनमानी करने वालों के खिलाफ चालान और जरूरत पडने पर कूड़ा जलाने वालों पर एफआईआर भी दर्ज करवाएं।

सरकारी साईट पर चल रहे निर्माण कार्यों पर धूल मिट्टी वायु में न फैले, इसके लिए पानी छिडक़ाव जरूरी

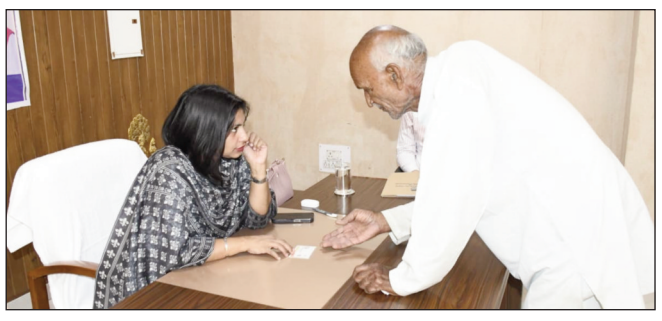
डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि वायु प्रदूषण नियंत्रण को लेकर लोग काफी जागरूक हो चुके हैं। उन्होंने कहा कि सरकारी साईट पर चल रहे निर्माण कार्यों पर धूल मिट्टी वायु में न फैले, इसके लिए पानी छिडक़ाव जरूरी है। उन्होंने कहा कि शहरी क्षेत्र में सड़क मार्गों पर अतिक्रमण करने वालों पर सख्ती बरतने की जरूरत है कि यातायात जाम की समस्या न पैदा हो।

प्रदूषण नियंत्रण के लिए सिटीजन चार्टर का पालन करें नागरिक

डीसी वर्षा खांगवाल ने बताया कि वायु प्रदूषण नियंत्रण में प्रत्येक नागरिक की सहभागिता आवश्यक है ताकि स्वच्छ एवं स्वस्थ वातावरण सुनिश्चित किया जा सके। उन्होंने बताया कि नागरिक अपने वाहनों के इंजन को उचित ढंग से ट्यून रखें। अपने वाहनों में टायर का दबाव उचित बनाए रखें ताकि ईंधन की खपत कम हो। वाहनों के पीयूसी प्रमाणपत्र अपडेट रखें। ट्रैफिक सिग्नल यानि लाल बत्ती पर इंजन बंद कर दें। प्रदूषण कम करने के लिए हाइब्रिड या इलेक्ट्रिक वाहनों को प्राथमिकता दें। खुले स्थानों पर कूड़ा-कचरा न फैलाएं और न ही जलाएं। अधिक से अधिक पेड़ लगाएं और उनकी देखभाल करे। त्योहारों को पर्यावरण-अनुकूल तरीके से मनाएं, पटाखों से बचें। उन्होंने नागरिकों से अनुरोध किया है कि वे इन नियमों का पालन कर वायु गुणवत्ता में सुधार लाने में सहयोग दें।

क्षेत्रवासियों की समस्याओं का अब बहादुरगढ़ में ही हो रहा प्रभावी समाधान : डीसी

जनसेवा की भावना को देखते हुए बहादुरगढ़ स्थित कैंप कार्यालय पहुंची डीसी वर्षा खांगवाल
लघु सचिवालय स्थित कैंप कार्यालय में सुनीं नागरिकों की समस्याएं, अधिकारियों को दिए समयबद्ध समाधान के निर्देश
आमजन को सरकारी सेवाओं का लाभ दिलाना और शिकायतों का निवारण करना प्रशासन की प्राथमिकता





बहादुरगढ़, 21 अक्टूबर

बहादुरगढ़ क्षेत्र के नागरिकों की समस्याओं का प्राथमिकता के आधार पर समाधान करने और उन्हें सरकारी सेवाओं का लाभ सुगमता से उपलब्ध करवाने के लिए जिला प्रशासन लगातार प्रयासरत है। जनसेवा की भावना को देखते हुए बुधवार को जन शिकायतों के निदान के लिए डीसी वर्षा खांगवाल बहादुरगढ़ लघु सचिवालय कैंप ऑफिस पहुंची।

डीसी वर्षा खांगवाल ने बहादुरगढ़ स्थित लघु सचिवालय के कैंप कार्यालय में जनसुनवाई करते हुए नागरिकों की समस्याएं सुनीं। उन्होंने कहा कि बहादुरगढ में बैठकर क्षेत्र के लोगों की शिकायत का निदान करने का कार्य किया जा रहा है ताकि यहां के लोगों को झज्जर जिला मुख्यालय ओर न जाना पड़े। उन्होंने जनसुनवाई करते हुए संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिए कि आमजन की शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए उनका नियमानुसार समाधान सुनिश्चित करें, ताकि लोगों को अपनी समस्याओं के समाधान के लिए अनावश्यक परेशानी न उठानी पड़े।

नागरिकों की समस्याएं सुनकर मौके पर दिए आवश्यक दिशा-निर्देश

जनसुनवाई के दौरान बहादुरगढ़ क्षेत्र के नागरिकों ने अपनी विभिन्न समस्याएं और शिकायतें डीसी के समक्ष रखी। डीसी ने प्रत्येक शिकायत को गंभीरता से सुना और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक कार्रवाई करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि नागरिकों की समस्याओं का समाधान करना प्रशासन की जिम्मेदारी है। इसलिए अधिकारी शिकायतों को लंबित रखने के बजाय उन पर तत्परता से कार्रवाई करें और नियमानुसार समाधान सुनिश्चित करें।

बहादुरगढ़ के लोगों को मिले बेहतर प्रशासनिक सुविधाएं

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि जनसुनवाई का मुख्य उद्देश्य नागरिकों को अपनी समस्याएं सीधे प्रशासन के समक्ष रखने का अवसर देना और उनके समाधान की प्रक्रिया को सरल एवं प्रभावी बनाना है। उन्होंने कहा कि अधिकारियों को चाहिए कि वे आमजन की जरूरतों को समझते हुए जिम्मेदारी के साथ कार्य करें, ताकि लोगों को सरकारी कार्यालयों में बार-बार चक्कर न लगाने पड़ें और उनकी समस्याओं का समय पर निवारण हो सके। उन्होंने अधिकारियों को विभागीय समन्वय के साथ काम करने के निर्देश देते हुए कहा कि जिन शिकायतों में एक से अधिक विभागों की भूमिका है, उनमें आपसी तालमेल बनाकर कार्रवाई की जाए। इससे शिकायतों के समाधान में होने वाली अनावश्यक देरी को कम करने में मदद मिलेगी और नागरिकों को राहत मिल सकेगी।

जनता की समस्याओं का समाधान ही प्रशासन की प्राथमिकता

डीसी ने स्पष्ट किया कि जनसमस्याओं के समाधान में किसी भी प्रकार की ढिलाई नहीं होनी चाहिए। अधिकारी प्रत्येक शिकायत पर गंभीरता से विचार करें और निर्धारित नियमों के अनुसार उचित कार्रवाई करें। प्रशासन का प्रयास है कि नागरिकों को पारदर्शी, जवाबदेह और जनहितकारी व्यवस्था उपलब्ध हो तथा उनकी समस्याओं का समाधान प्रभावी ढंग से किया जा सके।

इस अवसर पर एसडीएम बहादुरगढ़ अभिनव सिवाच सहित अन्य विभागीय अधिकारी मौजूद रहे।

घर की सुरक्षा में लापरवाही पड़ सकती है भारी, अजनबी को प्रवेश देने से पहले पहचान की करें पूरी जांच : एसपी सिद्धान्त जैन

बिना पहचान सत्यापित किए घर में प्रवेश न दें, पुलिसकर्मी, डिलीवरी एजेंट या कर्मचारी बनकर आने वाले अनजान व्यक्तियों से रहें सतर्क

परिवहन विशेष न्यूज



हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा)। पुलिस अधीक्षक हिसार श्री सिद्धान्त जैन ने आमजन से घर की सुरक्षा को लेकर सतर्क रहने की अपील की है। उन्होंने कहा कि घर पर आने वाले किसी भी अनजान व्यक्ति को प्रवेश देने से पहले उसकी पहचान और आने का उद्देश्य सत्यापित करना बेहद जरूरी है। कई बार अपराधी घरेलू कामगार, बिजली-पानी विभाग के कर्मचारी, कुरियर डिलीवरी एजेंट या सरकारी अधिकारी बनकर घरों में प्रवेश करने का प्रयास कर सकते हैं। ऐसे में बिना जांच-पड़ताल किसी पर भरोसा करना चोरी, ठगी या अन्य आपराधिक वारदात का कारण बन सकता है।

अजनबी की पहचान जांचें, फिर ही खोलें घर का दरवाजा

एसपी हिसार ने नागरिकों को सलाह दी है कि घर पर आने वाले अनजान व्यक्ति की पहचान की पुष्टि किए बिना उसे अंदर प्रवेश न दें। विशेष रूप से अकेले रहने वाले बुजुर्गों, महिलाओं और बच्चों को अतिरिक्त सावधानी बरतनी चाहिए। किसी व्यक्ति के केवल वर्दी पहनने, पहचान पत्र दिखाने या सरकारी कर्मचारी होने का दावा करने पर तुरंत भरोसा न करें, बल्कि संबंधित विभाग या संस्था से संपर्क कर उसकी पुष्टि करें।

घर की सुरक्षा के लिए अपनाएं ये जरूरी सावधानियां

– पहचान पत्र की जांच करें: किसी कर्मचारी या अधिकारी के घर आने पर उसका पहचान पत्र देखें और संबंधित विभाग से उसकी पुष्टि करें।

– आने का उद्देश्य जानें: व्यक्ति के आने का कारण स्पष्ट रूप से पूछें। संदेह होने पर संबंधित संस्था के आधिकारिक नंबर पर फोन करके जानकारी लें।

– अनजान व्यक्ति को अकेले घर में न बुलाएं: संभव हो तो परिवार के किसी अन्य सदस्य या पड़ोसी की मौजूदगी में ही उससे बातचीत करें।

– बुजुर्गों और बच्चों को जागरूक करें: उन्हें समझाएं कि अभिभावकों की अनुमति और पहचान की पुष्टि के बिना किसी अजनबी के लिए दरवाजा न खोलें।

– सीसीटीवी और दरवाजे की सुरक्षा रखें: घर के मुख्य प्रवेश द्वार पर पर्याप्त रोशनी, मजबूत लॉक और संभव हो तो सीसीटीवी कैमरे लगवाएं।

– संदिग्ध गतिविधि की सूचना दें: कोई व्यक्ति जबरदस्ती घर में घुसने का प्रयास करे या उसकी गतिविधियां संदिग्ध लगें, तो उससे दूरी बनाए रखें और पुलिस को सूचित करें।

संदेह होने पर सतर्क रहें, कानून हाथ में न लें

एसपी हिसार ने स्पष्ट किया कि नागरिकों की जागरूकता अपराध की रोकथाम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यदि कोई व्यक्ति गलत पहचान बताकर घर में प्रवेश करने का प्रयास करता है या किसी प्रकार का दबाव बनाता है, तो उससे बहस या टकराव करने के बजाय सुरक्षित स्थान पर रहें और पुलिस को सूचना दें। आपात स्थिति में 112 पर कॉल करें।

हिसार पुलिस आमजन से अपील करती है कि घर की सुरक्षा को लेकर कोई लापरवाही न बरतें। बच्चों, महिलाओं और बुजुर्गों को भी इस संबंध में जागरूक करें तथा पड़ोस में होने वाली संदिग्ध गतिविधियों पर ध्यान रखें।

हिसार पुलिस का संदेश: पहले पहचान, फिर प्रवेश। आपकी थोड़ी-सी सतर्कता आपके घर और परिवार को अपराध से सुरक्षित रखने में मदद कर सकती है।

एशियन पैरा गेम्स 2026

लेखिका मोनिका डागा "आनंद", चेन्नई

जारी है जापान के नागोया में पाँचवे एशियन पैरा गेम्स,
भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं वहाँ पर हुनर बाज कीमती जेम्स,
जीत का लिए संकल्प और भीतर श्रमसाध्य तेजस्विनी धुनी रमा,
दनादन प्रतियोगिताओं में पदक जीत रहे हैं मजबूत कदम जमा ।

उनमें से पुरुषों की भाला फेंक खेल के हैं ये श्री रिंकू हुड्डा,
स्वर्ण जीत माँ को श्रद्धांजलि अर्पित की भरा मन के दर्द का गड्ढा,
अब तक भारत ने चटकाए कई सारे स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक,
महक रही है जापान की गलियों में भारत के जांबाजों की महक ।

देख रहा है विश्व भारत का हर एक क्षेत्र में छाया जो दबदबा,
संकल्प और समर्पण का रंग चुनौतियों से टकराने का जज्बा,
जिन्होंने ज़िंदगी से प्यार किया उसको हर हाल में स्वीकार किया,
दर्द को मुस्कुरा कर अपना लिया और सपनों को फिर साकार किया ।

जिंदगी यही सीख पग-पग पर देती या तो गमों का बस रो रोना,
यहाँ है बेहतर भूल कर भूत को आज में सुंदर खुशियाँ पिरोना,
उठतीं-गिरती इस काल की धारा में सुख-दुख की अनगिनत ये लहरें,
कमाया भी लुटाया भी 'आनंद' उन्होंने जो राहों में न ठहरें ।

जग को बस जीत का रंगारंग जश्न दिखाई और सुनाई देता,
हर किसी को परंतु जीत के पीछे छुपा गम महसूस नहीं होता,
जो प्रकट करें आभार जिंदगी उस पर अमृत सदाबहार बरसाती,
जिंदगी को दुआएं ही वरदानी सौभाग्य के फूलों से सजाती ।



बुरे तो हम हैं

रावण कहाँ बुरा था?
बुरे तो हम हैं

हम में से ही तो निकलते हैं
- कितने ही रावण हर रोज़

एक रावण को जलाकर
एक दिन में

एक चौक पर हम खुद को
ज़िंदगी भर के लिए
राम समझ लेते हैं

कितना सस्ता है
राम बनना
एक पुतला जलाओ
और हो गए राम

ना तपस्या
ना मर्यादा
ना त्याग
ना वनवास

बस एक तीली
और हम राम

वो रावण तो फिर भी
अपनी बुराई को
दस सिरों पर लेकर
घूमता था
दिखती थी उसकी
बुराई

गिन सकते थे लोग

हमारी बुराई?
- एक ही सिर में छुपी है
मुस्कुराहट के पीछे
राम-राम के पीछे
जय श्री राम के
नारे के पीछे

हम दफ्तर में रावण हैं
- रिश्वत लेते हुए
हम घर में रावण हैं
- अपनी ही सीता को रुलाते हुए
हम बाज़ार में रावण हैं
- भूख को बेचते हुए

और दशहरे वाले दिन
सबसे आगे खड़े होकर
हम ही सबसे ज़ोर से चिल्लाते हैं
- रावण को जलाओ!

रावण तो जल गया
पर हम?
- हम बच गए
हर साल
राम बनकर

रावण कहाँ बुरा था?
बुरे तो हम हैं

संयुक्त राष्ट्र की एमिशन गैप रिपोर्ट 2026 ने बजाई ख़तरे की घंटी! प्रकृति की आखिरी चेतावनी?

धरती तप रही है, दुनिया के वादे अधूरे हैं — 1.5 सी की लक्ष्मण रेखा टूटने की आशंका, दुनिया के पास कितना बचा है समय?

लेखक: एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं, गोंदिया महाराष्ट्र - संजय कुमार बाठला, प्रधान संपादक परिवहन विशेष समाचार पत्र

तथ्य एक नजर में

- **रिपोर्ट:** UNEP Emissions Gap Report 2026 — The Point of Return, जारी: 21 अक्टूबर 2026

- मुख्य संदेश: 1.5सी लक्ष्य को बिना या बहुत सीमित ओवरशूट के हासिल करना अब संभव नहीं, पर अतिरिक्त वृद्धि को न्यूनतम कर सदी के अंत तक फिर से 1.5सी पर लौटने का रास्ता अभी है

- कटौती का अल्टीमेटम (2025 के स्तर से): 2030 तक 18%, 2035 तक 45%, 2040 तक 69% की कटौती आवश्यक

- मौजूदा नीतियों से: सदी के अंत तक तापमान 2.8सी तक, घोषित प्रतिबद्धताएं लागू हों तो भी 2.6सी तक पहुंचने का अनुमान

- कम ओवरशूट परिदृश्य: मध्य शताब्दी के आसपास 1.7 से 1.8सी तक सीमित रखने और अंत तक 1.5सी पर लौटने की लगभग 50% संभावना

मुख्य बिंदु

- 1. वादे बनाम हकीकत: संकल्प और क्रियान्वयन के बीच गहरी खाई ही एमिशन गैप है

- 2. गर्मी, बाढ़, सूखा: तापमान वृद्धि से भीषण गर्म लहरें, अत्यधिक वर्षा, बाढ़, भूस्खलन, सूखा, समुद्र स्तर वृद्धि का खतरा

- 3. भारत की परीक्षा: विकास और ऊर्जा जरूरतों के बीच उत्सर्जन घटाने की दोहरी चुनौती

- 4. समाधान: सौर-पवन विस्तार, ग्रिड आधुनिकीकरण, ऊर्जा भंडारण, सार्वजनिक परिवहन, मीथेन नियंत्रण, वन संरक्षण

विस्तृत महा-विश्लेषण

1. 1.5सी का लक्ष्य क्यों सबसे बड़ी चिंता है? पेरिस समझौते में देशों ने तापमान वृद्धि को 2सी से काफी नीचे और 1.5सी तक सीमित करने का संकल्प लिया था। लेकिन वर्षों की अपर्याप्त कार्रवाई ने परिस्थिति को गंभीर कर दिया है। रिपोर्ट स्पष्ट करती है — अब बिना ओवरशूट के 1.5सी बचाना संभव नहीं। इसका अर्थ है तापमान कुछ समय के लिए इस सीमा से ऊपर जाएगा। लेकिन अगर तेजी से और बड़े पैमाने पर कटौती हो, तो अधिकतम वृद्धि को सीमित करना और अंत में वापस लौटना संभव है।

2. 2030, 2035, 2040 — सबसे बड़ा अल्टीमेटम यूएनईपी के अनुसार, सबसे कम ओवरशूट के लिए ऊर्जा, उद्योग, परिवहन, भवन और कृषि में बड़े बदलाव चाहिए। जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम किए बिना और स्वच्छ ऊर्जा तेजी से अपनाए बिना इतनी बड़ी कटौती संभव नहीं। लक्ष्य सिर्फ कागज पर नहीं, जमीन पर परिणाम में दिखना चाहिए। जितनी देर होगी, कदम उतने ही कठोर होंगे।

3. मौजूदा नीतियां जारी रहीं तो 2.8सी तक तापमान यह आंकड़ा पेरिस लक्ष्यों से काफी दूर है। दुनिया के कई देश नवीकरणीय ऊर्जा, कार्बन कमी और नेट-जीरो घोषित कर चुके हैं, पर प्रतिबद्धताएं वैज्ञानिक आवश्यकता के स्तर की कटौती सुनिश्चित नहीं करतीं। यही गैप पाटना है — अल्पकालिक लक्ष्य, निवेश, ऊर्जा नीति और जवाबदेही को एक साथ मजबूत करके।

4. जलवायु परिवर्तन के बढ़ते दुष्परिणाम तापमान वृद्धि सिर्फ आंकड़ा नहीं — यह मानव जीवन, खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था और संसाधनों का प्रश्न है। गर्म लहरें श्रम उत्पादकता घटाती हैं, बाढ़ और सूखा कृषि को प्रभावित करते हैं, समुद्र स्तर वृद्धि तटीय आबादी को खतरे



में डालती है। बोझ समान नहीं पड़ता — सीमित संसाधन वाले देश और संवेदनशील समुदाय सबसे अधिक जोखिम झेलते हैं। इसलिए कार्रवाई का अर्थ सिर्फ उत्सर्जन घटाना नहीं, बाढ़ नियंत्रण, जल संरक्षण, टिकाऊ कृषि, चेतावनी प्रणाली और जलवायु-अनुकूल बुनियादी ढांचे में निवेश भी है।

5. भारत की जलवायु प्रतिबद्धताएं और प्रगति भारत ने 2070 तक नेट-जीरो का दीर्घकालिक लक्ष्य घोषित किया है। NDC 3.0 में 2035 तक 2005 के स्तर की तुलना में GDP की उत्सर्जन तीव्रता में 47% कमी और कुल स्थापित बिजली क्षमता में गैर-जीवाश्म ऊर्जा की हिस्सेदारी 60% तक पहुंचाने का लक्ष्य है।

- 2022 तक उत्सर्जन तीव्रता में 2005 की तुलना में 37.38% कमी दर्ज

- जून 2025 में गैर-जीवाश्म क्षमता 50% से अधिक, 30 जून 2026 तक 54.18%

- 2005 से 2022 के बीच अतिरिक्त कार्बन सिंक 2.44 अरब टन CO- समतुल्य, 2030 तक 2.5 से 3 अरब टन का लक्ष्य

यह प्रगति का संकेत है, पर ऊर्जा परिवर्तन, वन संरक्षण और वास्तविक उत्सर्जन कटौती पर निरंतर काम जरूरी है।

6. वैश्विक पर्यावरण सूचकांक में भारत की स्थिति येल के Environmental Performance Index 2026 में भारत को 177 देशों में 176वां स्थान मिला, स्कोर 100 में से 22.46। जलवायु परिवर्तन शमन श्रेणी में 130वां स्थान। यह सूचकांक वायु गुणवत्ता, पर्यावरणीय स्वास्थ्य, पारिस्थितिकी तंत्र और जलवायु को मिलाकर बनता है — सिर्फ एक लक्ष्य का सूचक नहीं। रैंकिंग बताती है कि स्वच्छ ऊर्जा प्रगति के बावजूद पर्यावरणीय प्रदर्शन में व्यापक सुधार की जरूरत है। चुनौती है — गैर-जीवाश्म क्षमता वृद्धि को वास्तविक स्वच्छ उत्पादन, कोयले पर निर्भरता में कमी, वायु प्रदूषण नियंत्रण और वन संरक्षण से जोड़ना।

7. समाधान क्या है? सौर और पवन का तेजी से विस्तार, ग्रिड आधुनिकीकरण, भंडारण, सार्वजनिक परिवहन, ऊर्जा-कुशल भवन और उद्योगों में स्वच्छ तकनीक। मीथेन नियंत्रण से कम समय में लाभ। जंगलों और पारिस्थितिकी तंत्र का संरक्षण। कार्बन हटाने की तकनीक जरूरी पर उस पर पूरी निर्भरता ठीक नहीं — प्राथमिकता स्रोत पर उत्सर्जन घटाना है। विकसित देशों को वित्तीय सहायता, तकनीक हस्तांतरण और जलवायु वित्त की जिम्मेदारी निभानी होगी, ताकि परिवर्तन न्यायसंगत हो।

संपादकीय टिप्पणी

> रिपोर्ट का संदेश निराशा नहीं, चेतावनी है। धरती तप रही है, वादे अधूरे हैं। अब भी समय है — अगर सरकारें जागें, नीतियां जमीन पर उतरें और जनता स्वच्छ ऊर्जा, सार्वजनिक परिवहन और पर्यावरण संरक्षण को अपनाए। आने वाली पीढ़ियों का भविष्य इसी पर निर्भर है।

प्लास्टिक, कार्टन और स्क्रैप की आड़ में फलते गोदामों का नेटवर्क!

वेदव्यास से बिसरा चौक और बिसरा चौक रहमतनगर तक कबाड़ कारोबार पर उठे सवाल; खुले में तांबा पिघलाने की शिकायत, पुलिस-प्रशासन की निगरानी पर सवालिया निशान



रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला

औद्योगिक नगरी राउरकेला और आसपास के क्षेत्रों में प्लास्टिक, कार्टन तथा स्क्रैप के नाम पर संचालित बड़े-बड़े गोदामों की गतिविधियां जांच की मांग कर रही हैं। स्थानीय स्तर पर आरोप हैं कि कबाड़ कारोबार की आड़ में कुछ स्थानों पर वाहनों के इंजन, स्पेयर पार्ट्स और अन्य कीमती धातुओं का कारोबार भी किया जा रहा है। यदि इन गतिविधियों के पीछे बिना वैध दस्तावेजों के खरीद-बिक्री या चोरी के सामान की खपत हो रही है, तो यह कानून-व्यवस्था के लिए गंभीर चुनौती हो सकती है।



वेदव्यास मंदिर मार्ग से लेकर टीसीआई व डंडियापाली सड़क के गर्जन मार्ग तक कई बड़े भूखंडों पर फैले गोदामों को लेकर सवाल उठ रहे हैं। जमुनानानाकि जाने वाले मार्ग पर सुनैना मेटल के विपरीत खुले मैदान में संचालित बताए जा रहे गोदामों की गतिविधियों की जांच आवश्यक है। इसके अलावा माड़ियाकुदार, आईडीसी क्षेत्र तथा शहर के अन्य हिस्सों में भी स्क्रैप कारोबार के विस्तार को लेकर स्थानीय स्तर पर चर्चा है।

बिसरा चौक और ओवरब्रिज के सामने रहमतनगर क्षेत्र से भी खुले में आग जलाकर तांबा पिघलाने की शिकायतें सामने आई हैं। यदि ऐसा किया जा रहा है, तो इससे वायु प्रदूषण, आगजनी और आसपास रहने वाले लोगों की सुरक्षा से जुड़े खतरे पैदा हो सकते हैं। ऐसे मामलों में पर्यावरणीय नियमों और अग्नि सुरक्षा मानकों के अनुपालन की जांच जरूरी है।

स्थानीय आरोपों के अनुसार, कुछ कारोबारियों के जरिए कबाड़ और वाहन के पुर्जों की आपूर्ति झारसुगुड़ा, बामड़ा तथा रायगढ़ सहित अन्य क्षेत्रों तक किए जाने की आशंका जताई जा रही है। हालांकि, इस कथित नेटवर्क और वाहनों के पुर्जों की वैधता की पुष्टि जांच के बाद ही हो सकती है।

अब सवाल पुलिस और संबंधित विभागों की निगरानी व्यवस्था का है। क्या इन गोदामों के पास आवश्यक लाइसेंस, खरीद-बिक्री के रिकॉर्ड, भूमि उपयोग की अनुमति और अग्नि सुरक्षा संबंधी व्यवस्थाएं हैं? क्या संदिग्ध वाहन-पुर्जों के स्रोत की नियमित जांच होती है?

प्रशासन को संबंधित स्थलों का निरीक्षण कर कारोबार के दस्तावेजों, माल के स्रोत और पर्यावरणीय अनुपालन की जांच करनी चाहिए। दोष मिलने पर नियमानुसार कार्रवाई होनी चाहिए। औद्योगिक विकास के साथ नागरिक सुरक्षा और कानून का पालन भी उतना ही आवश्यक है।

पुलिस लाइन में शहीदों को दी गई श्रद्धांजलि



परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। वर्दी सिर्फ जिम्मेदारी नहीं, बल्कि देश और समाज के लिए सर्वस्व न्योछावर करने का संकल्प है। इसी संकल्प को नमन करते हुए बुधवार को गोरखपुर पुलिस लाइन में पुलिस स्मृति दिवस पर शहीद पुलिसकर्मियों को भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई। कार्यक्रम में वर्ष 1959 से अब तक कर्तव्य निर्वहन के दौरान अपने प्राणों की आहुति देने वाले वीर जवानों को याद किया गया। वरिष्ठ अधिकारियों ने स्मृति स्थल पर पुष्प अर्पित कर उनके शौर्य, साहस और कर्तव्यनिष्ठा को नमन किया।

श्रद्धांजलि कार्यक्रम में एडीजी जोन राम कुमार, डीआईजी रेंज एस. चनप्पा, एसएसपी डॉ. कौस्तुभ, एसपी सिटी निमिष पाटिल, एसपी उत्तरी राजेश धुनावता, एसपी दक्षिणी दिनेश कुमार पुरी, एसपी पुलिस रेडियो गोरखपुर-वाराणसी जोन राम निवास सिंह यादव, एसपी रेलवे लक्ष्मी निवास मिश्र, एसपी एसएसएफ द्वितीय वाहिनी रवि, एसपी ट्रैफिक अमित श्रीवास्तव, सहायक पुलिस अधीक्षक एवं सीओ कैंट अरुण कुमार एस. समेत जनपद के विभिन्न सर्किलों के क्षेत्राधिकारी और अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

पुलिस स्मृति दिवस का इतिहास 21 अक्टूबर 1959 की घटना से जुड़ा है, जब लद्दाख में सीआरपीएफ के जवानों ने चीनी सैनिकों के हमले का बहादुरी से मुकाबला किया था। इस संघर्ष में 10 जवान शहीद हुए थे। उन्हीं की स्मृति में हर साल यह दिवस मनाया जाता है। इस दौरान 25 सितंबर 2025 से 31 अगस्त 2026 तक बलिदान देने वाले उत्तर प्रदेश पुलिस के जवानों को भी याद किया गया। अधिकारियों ने कहा कि शहीदों का बलिदान पुलिस बल की ताकत है और उनकी वीरता आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बनी रहेगी।

44वीं वाहिनी एसएसबी नरकटियागंज में पुलिस स्मृति दिवस पर शहीद जवानों को दी गई श्रद्धांजलि



कमांडेंट बलवंत सिंह नेगी के नेतृत्व में अधिकारियों एवं जवानों ने पुष्प अर्पित कर शहीदों के बलिदान को किया नमन

नरकटियागंज। 44वीं वाहिनी सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी), नरकटियागंज के प्रांगण में बुधवार को पुलिस स्मृति दिवस के अवसर पर शहीद जवानों को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की गई। कमांडेंट श्री बलवंत सिंह नेगी के नेतृत्व में आयोजित कार्यक्रम में वाहिनी के अधिकारियों, अधीनस्थ अधिकारियों एवं सभी बलकार्मिकों ने शहीदों की स्मृति में मौन धारण कर उन्हें नमन किया। इस दौरान कमांडेंट ने पिछले एक वर्ष में शहीद हुए पुलिस बलों एवं केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों के जवानों के नाम पढ़कर सुनाए।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कमांडेंट बलवंत सिंह नेगी ने कहा कि पुलिस स्मृति दिवस प्रत्येक वर्ष 21 अक्टूबर को मनाया जाता है। यह दिन उन वीर पुलिसकर्मियों एवं केंद्रीय सशस्त्र बलों के जवानों के अदम्य साहस, कर्तव्यनिष्ठा और सर्वोच्च बलिदान को याद करने के लिए समर्पित है, जिन्होंने देश की सुरक्षा एवं सेवा करते हुए अपने प्राण न्योछावर कर दिए।

उन्होंने पुलिस स्मृति दिवस के ऐतिहासिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इसकी शुरुआत 21 अक्टूबर 1959 को लद्दाख के हॉट सप्रिंग्स में हुई घटना से जुड़ी है। उस दिन चीनी सैनिकों के घात लगाकर किए गए हमले में पुलिस दल के 10 जवान शहीद हो गए थे। इस घटना ने देश की सुरक्षा में तैनात पुलिसकर्मियों के बलिदान और समर्पण की गौरवगाथा को इतिहास में दर्ज किया।

घटना के लगभग तीन सप्ताह बाद 13 नवंबर 1959 को शहीद जवानों के पार्थिव शरीर लौटाए गए। इसके बाद जनवरी 1960 में आयोजित राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों के पुलिस महानिरीक्षकों के वार्षिक सम्मेलन में निर्णय लिया गया कि प्रत्येक वर्ष 21 अक्टूबर को पुलिस स्मृति दिवस के रूप में मनाया जाएगा। इस वर्ष पुलिस स्मृति दिवस की 67वीं वर्षगांठ मनाई जा रही है।

कार्यक्रम के दौरान उप कमांडेंट श्री ज्ञानेंद्र कुमार, उप कमांडेंट मो. हसनैन खान, सहायक कमांडेंट एवं चिकित्सा अधिकारी डॉ. कुंदन जायसवाल, सहायक कमांडेंट (संचार) श्री रियाज पी. सहित 44वीं वाहिनी के अन्य अधिकारी, अधीनस्थ अधिकारी एवं सभी बलकार्मिक उपस्थित रहे। सभी ने शहीदों के चित्रों पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी तथा राष्ट्र की सुरक्षा के लिए उनके सर्वोच्च बलिदान को याद किया।

कर्तव्य की वेदी पर प्राण न्योछावर करने वाले पुलिसकर्मियों को नमन

राउरकेला पुलिस रिजर्व ग्राउंड में पुलिस स्मृति दिवस आयोजित, शहीद जवानों के बलिदान को किया गया याद

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला

कर्तव्य, साहस और सर्वोच्च बलिदान की स्मृतियों को नमन करते हुए बुधवार को राउरकेला पुलिस रिजर्व ग्राउंड में पुलिस स्मृति दिवस (Police Commemoration Day) मनाया गया। इस अवसर पर ड्यूटी के दौरान अपने प्राणों की आहुति देने वाले पुलिसकर्मियों को श्रद्धापूर्वक याद किया गया।

कार्यक्रम में वेस्टर्न रेंज के डीआईजी बृजेश राय मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे, जबकि राउरकेला के पुलिस अधीक्षक नितेश वाधवानी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

पुलिस स्मृति दिवस उन पुलिसकर्मियों के अदम्य साहस, कर्तव्यनिष्ठा और समर्पण का प्रतीक है, जिन्होंने कानून-व्यवस्था बनाए रखने, नागरिकों की सुरक्षा करने और समाज में शांति कायम रखने के लिए अपने जीवन तक का बलिदान दे दिया। यह दिवस वर्दी के पीछे छिपे उस मानवीय संकल्प की याद दिलाता है, जिसमें व्यक्तिगत सुरक्षा से ऊपर जनसेवा और कर्तव्य को स्थान दिया जाता है।



प्लूटोन मॉल के सामने RSP की जमीन पर गतिविधियों को लेकर सवाल

बड़े प्रतिष्ठानों पर कथित नरमी, गरीबों के ठेलों पर सख्ती! लैंडगार्ड की कार्यप्रणाली जांच के घेरे में

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला

राउरकेला में प्लूटोन मॉल के सामने राउरकेला स्टील प्लांट (RSP) की कथित जमीन के इस्तेमाल और पेड़ों की कटाई को लेकर गंभीर सवाल उठ रहे हैं। आरोप है कि संबंधित भूखंड का उपयोग पार्किंग अथवा पार्क जैसी गतिविधियों के लिए किया जा रहा है, जबकि वहां पेड़ों की कटाई भी हुई है। हालांकि, जमीन के स्वामित्व, उपयोग की अनुमति और पेड़ काटने की वैधानिकता की स्वतंत्र पुष्टि आवश्यक है।

मामले का दूसरा पहलू RSP के भूमि सुरक्षा तंत्र की कार्यप्रणाली से जुड़ा है। स्थानीय स्तर पर सवाल उठ रहे हैं कि यदि किसी भूखंड पर अनधिकृत कब्जा है, तो उसकी पहचान कर कार्रवाई करना संबंधित विभाग की जिम्मेदारी है। फिर बड़े व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के आसपास भूमि के कथित उपयोग की स्थिति स्पष्ट क्यों नहीं की जा रही? क्या संबंधित स्थानों के लिए विधिवत अनुमति ली गई है? क्या किराया, लीज अथवा अन्य शुल्क निर्धारित हैं? इन सवालों का जवाब सार्वजनिक होना चाहिए।



स्थानीय आरोपों में मधुबन के निकट पार्किंग स्थल तथा अन्य होटल और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों द्वारा RSP की जमीन के इस्तेमाल का मुद्दा भी शामिल है। दूसरी ओर, गरीब ठेला संचालकों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई किए जाने की शिकायतें हैं। यदि ऐसा है, तो कानून के पालन में समानता सुनिश्चित करना जरूरी है। निहत्थे और कमजोर व्यक्ति पर कार्रवाई करना आसान हो सकता है, लेकिन प्रभावशाली प्रतिष्ठानों के मामले में भी नियमों का समान रूप से पालन होना चाहिए।

भारत सरकार के सार्वजनिक उपक्रम SAIL की आधिकारिक जानकारी के अनुसार, RSP की भूमि लीजहोल्ड व्यवस्था के अंतर्गत है। ऐसे में भूमि के उपयोग, आवंटन और सुरक्षा से जुड़े प्रत्येक निर्णय में पारदर्शिता और जवाबदेही अनिवार्य है।

अब जरूरत है कि RSP प्रबंधन प्लूटोन मॉल के सामने वाले भूखंड सहित अन्य विवादित स्थलों का सीमांकन कराए, पेड़ों की कटाई और भूमि उपयोग के दस्तावेज सार्वजनिक करे तथा लैंडगार्ड की भूमिका की निष्पक्ष जांच कराए। सवाल किसी व्यक्ति विशेष का नहीं, सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा और कानून के समक्ष समानता का है।

महिलाओं की समझदारी: धारणा या वैज्ञानिक तथ्य?



● डॉ. विजय गर्ग



क्या महिलाएँ पुरुषों से अधिक समझदार होती हैं? यह सवाल पीढ़ियों से लोगों की दिलचस्पी का विषय रहा है। आमतौर पर महिलाओं को भावनात्मक रूप से समझदार, धैर्यवान, संवेदनशील और एक साथ कई जिम्मेदारियाँ निभाने में सक्षम माना जाता है। दूसरी ओर, पुरुषों को अक्सर तार्किक, विश्लेषण करने वाला और निर्णय लेने में दृढ़ समझा जाता है। लेकिन इन धारणाओं में कितनी सच्चाई है? क्या महिलाओं की समझदारी केवल एक सामाजिक धारणा है या विज्ञान भी इस विचार का समर्थन करता है कि महिलाएँ लोगों और परिस्थितियों को समझने में कुछ विशिष्ट क्षमताएँ रखती हैं?

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए बुद्धिमत्ता, भावनात्मक समझ, निर्णय लेने की क्षमता और सामाजिक अनुभवों के प्रभाव का संतुलित दृष्टिकोण से विश्लेषण करना आवश्यक है।

बुद्धिमत्ता को रूढ़िवादी धारणाओं से परे समझना

बुद्धिमत्ता कोई एक गुण नहीं है, जिसे केवल एक क्षमता के माध्यम से मापा जा सके। इसमें तार्किक सोच, भाषायी योग्यता, स्मरण शक्ति, रचनात्मकता, समस्याओं का समाधान, भावनात्मक जागरूकता और अनुभवों से सीखने की क्षमता शामिल हैं।

वैज्ञानिक शोध सामान्यतः इस व्यापक दावे का समर्थन नहीं करता कि महिलाएँ या पुरुष हर दृष्टि से एक-दूसरे से अधिक बुद्धिमान होते हैं। दोनों समूहों के व्यक्तियों में काफी अंतर होता है और प्रत्येक व्यक्ति की क्षमताएँ अलग-अलग हो सकती हैं।

कुछ अध्ययनों में विशेष मानसिक कार्यों के दौरान औसत अंतर सामने आए हैं, लेकिन इससे यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि कोई एक लिंग स्वाभाविक रूप से अधिक समझदार है। समझदारी में केवल बुद्धिमत्ता ही नहीं, बल्कि सही निर्णय लेना, धैर्य, आत्म-जागरूकता, सहानुभूति और निर्णयों के दीर्घकालिक परिणामों को समझना भी शामिल है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सहानुभूति

एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें महिलाएँ कुछ क्षमताओं के मामले में औसतन बेहतर प्रदर्शन कर सकती हैं। उदाहरण के लिए, कुछ शोधों के अनुसार महिलाएँ चेहरे के भाव पहचानने, भावनात्मक संकेतों को समझने और बिना बोले व्यक्त किए गए संदेशों की व्याख्या करने वाले कुछ कार्यों में औसतन बेहतर हो सकती हैं। हालाँकि, ये अंतर प्रत्येक व्यक्ति में नहीं पाए जाते और महिलाओं तथा पुरुषों की क्षमताओं में काफी समानता भी होती है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता व्यक्ति को अपनी भावनाएँ समझने, दूसरों की भावनाओं को पहचानने और उचित व्यवहार करने में सहायता करती है। परिवार, कार्यस्थल और समाज में यह क्षमता गलतफहमियाँ दूर करने, रिश्तों को मजबूत बनाने और विवादों को सुलझाने में सहायक होती है।

फिर भी, सहानुभूति केवल महिलाओं का गुण नहीं है। पुरुष भी उतने ही देखभाल करने वाले, भावनात्मक रूप से संवेदनशील और सहयोगी हो सकते हैं। पारिवारिक वातावरण, शिक्षा, व्यक्तिगत अनुभव और सांस्कृतिक अपेक्षाएँ इस बात को प्रभावित करती हैं कि व्यक्ति भावनात्मक क्षमताओं का विकास किस प्रकार करता है।

सामाजिक अनुभवों का प्रभाव

कई समाजों में महिलाएँ परंपरागत रूप से बच्चों की देखभाल, घरेलू प्रबंधन और पारिवारिक संबंधों की बड़ी जिम्मेदारियाँ निभाती रही हैं। इन जिम्मेदारियों से योजना बनाने, धैर्य रखने, आपसी सहमति स्थापित करने और व्यावहारिक समस्याओं को हल करने के कौशल विकसित हो सकते हैं। जो महिलाएँ नौकरी और पारिवारिक जिम्मेदारियों, दोनों को संभालती हैं, वे प्राथमिकताएँ निर्धारित करने और विभिन्न कार्यों के बीच संतुलन बनाने का अनुभव भी प्राप्त करती हैं।

लेकिन इन क्षमताओं को महिलाओं के जन्मजात गुण नहीं मानना चाहिए। ये अक्सर सामाजिक भूमिकाओं और अवसरों के माध्यम से विकसित होती हैं। यदि पुरुष भी ऐसी जिम्मेदारियाँ निभाएँ, तो वे भी समान कौशल विकसित कर सकते हैं।

ऐतिहासिक रूप से अनेक स्थानों पर महिलाओं को शिक्षा, रोजगार और नेतृत्व के क्षेत्रों में असमान अवसरों का सामना करना पड़ा है। इसके बावजूद उन्होंने विज्ञान, चिकित्सा, साहित्य, प्रशासन, उद्योग और सामाजिक जीवन में उल्लेखनीय योगदान दिया है। उनकी उपलब्धियाँ बताती हैं कि किसी एक लिंग की श्रेष्ठता से अधिक महत्वपूर्ण समान अवसर हैं।

निर्णय लेना: तर्क या अंतर्ज्ञान?

एक प्रचलित धारणा है कि महिलाएँ भावनाओं के आधार पर और पुरुष तर्क के आधार पर निर्णय लेते हैं। यह विभाजन भ्रामक है। महिलाएँ और पुरुष, दोनों निर्णय लेते समय भावनाओं, तर्क, अनुभव और अंतर्ज्ञान का उपयोग करते हैं।

भावनाएँ कभी-कभी निर्णयों को प्रभावित कर सकती हैं, लेकिन वे जोखिमों, संबंधों और व्यक्तिगत प्राथमिकताओं के बारे में उपयोगी जानकारी भी देती हैं। अंतर्ज्ञान अक्सर लंबे अनुभव से विकसित होता है। एक शिक्षक विद्यार्थी की कठिनाई को जल्दी पहचान सकता है, डॉक्टर बीमारी के सूक्ष्म लक्षणों को समझ सकता है और माता-पिता अपने बच्चे की परेशानी महसूस कर सकते हैं। ये क्षमताएँ अक्सर अनुभव और ज्ञान का परिणाम होती हैं, न कि किसी एक लिंग की विशेषता।

अच्छे निर्णय लेने के लिए तथ्यों की जाँच, धारणाओं पर प्रश्न उठाना, अनिश्चितता को स्वीकार करना और आवश्यकता पड़ने पर अपनी राय बदलना जरूरी है। इन गुणों को कोई भी व्यक्ति विकसित कर सकता है।

क्या महिलाओं को अधिक समझदार कहा जा सकता है?

केवल महिला या पुरुष होने के आधार पर किसी व्यक्ति की समझदारी का निर्णय नहीं किया जा सकता। परिपक्वता, ज्ञान, भावनाओं पर नियंत्रण, नैतिक मूल्य और जीवन के अनुभव समझदारी से लिए गए निर्णयों के अधिक विश्वसनीय संकेतक हैं।

कुछ महिलाएँ अत्यंत संवेदनशील और सूझबूझ वाली हो सकती हैं, जबकि कुछ को विशेष परिस्थितियों में निर्णय लेने में कठिनाई हो सकती है। यही बात पुरुषों पर भी लागू होती है। सामान्यीकरण व्यक्तिगत स्वभाव और क्षमताओं की विविधता को नजरअंदाज कर देता है। महिलाओं को स्वाभाविक रूप से सभी की भावनाओं और जिम्मेदारियों को संभालने में सक्षम मानना उन पर अनावश्यक बोझ भी डाल सकता है।

इसलिए यह पूछने के बजाय कि कौन-सा लिंग अधिक समझदार है, हमें यह सोचना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति में समझदारी कैसे विकसित की जा सकती है।

निष्कर्ष

यह धारणा कि महिलाएँ पुरुषों से अधिक समझदार होती हैं, कुछ सामाजिक अनुभवों और कुछ मनोवैज्ञानिक अंतरों के बारे में किए गए अवलोकनों पर आधारित हो सकती है, लेकिन यह कोई सार्वभौमिक वैज्ञानिक तथ्य नहीं है। शोध संकेत देते हैं कि महिलाएँ भावनाओं को पहचानने के कुछ पहलुओं में औसतन बेहतर हो सकती हैं, लेकिन कई अन्य मानसिक क्षमताओं में दोनों लिंगों के बीच पर्याप्त समानता पाई जाती है।

वास्तविक समझदारी सोच-विचार करके निर्णय लेने, सहानुभूति, बौद्धिक विनम्रता, ईमानदारी और जिम्मेदारी निभाने में दिखाई देती है। ये गुण किसी एक लिंग की संपत्ति नहीं हैं। परिवारों, विद्यालयों और समाज को लड़कियों और लड़कों, महिलाओं और पुरुषों में इन गुणों को समान रूप से प्रोत्साहित करना चाहिए।

अंततः, समझदारी इस बात से निर्धारित नहीं होती कि कोई व्यक्ति महिला है या पुरुष। यह शिक्षा, अनुभव, आत्मचिंतन और दूसरों को समझने की इच्छा से विकसित होती है। वास्तव में समझदार समाज वही है जो हर व्यक्ति की सूझबूझ का सम्मान करे और उसे अपनी क्षमताएँ विकसित करने के समान अवसर प्रदान करे।

> वैज्ञानिक शोध सामान्यतः इस व्यापक दावे का समर्थन नहीं करता कि महिलाएँ या पुरुष हर दृष्टि से एक-दूसरे से अधिक बुद्धिमान होते हैं। दोनों समूहों के व्यक्तियों में काफी अंतर होता है और प्रत्येक व्यक्ति की क्षमताएँ अलग-अलग हो सकती हैं। कुछ अध्ययनों में विशेष मानसिक कार्यों के दौरान औसत अंतर सामने आए हैं, लेकिन इससे यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि कोई एक लिंग स्वाभाविक रूप से अधिक समझदार है।



तकनीक से परे शिक्षा: मानवीय जुड़ाव की शक्ति

डॉ. विजय गर्ग

डिजिटल युग में शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय परिवर्तन आया है। स्मार्ट कक्षाओं, इंटरैक्टिव व्हाइटबोर्ड, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), ऑनलाइन शिक्षण मंचों और डिजिटल पुस्तकालयों ने ज्ञान प्राप्त करने तथा उसे साझा करने के तरीकों को बदल दिया है। आज विद्यार्थी कुछ ही सेकंड में दुनिया भर की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, ऑनलाइन कक्षाओं में भाग ले सकते हैं और अपनी सुविधानुसार सीख सकते हैं। तकनीक ने शिक्षा को अधिक सुलभ, लचीला और प्रभावी बनाया है। फिर भी, इस तीव्र परिवर्तन के बीच एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न हमारे सामने है: क्या तकनीक शिक्षण के मूल में स्थित मानवीय जुड़ाव का स्थान ले सकती है?

इसका उत्तर स्पष्ट है। तकनीक शिक्षा को सशक्त बना सकती है, लेकिन एक अच्छे शिक्षक की संवेदनशीलता, समझ, प्रोत्साहन और प्रेरणा का स्थान नहीं ले सकती। शिक्षा केवल जानकारी देने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि मानवीय क्षमताओं के विकास का माध्यम है।

शिक्षक: जानकारी देने वाले से कहीं अधिक

पहले शिक्षकों को ज्ञान का प्रमुख स्रोत माना जाता था। आज सर्च इंजन, शैक्षिक ऐप, वीडियो व्याख्यान और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से जानकारी आसानी से उपलब्ध है। विद्यार्थी पारंपरिक कक्षा में उपस्थित हुए बिना भी कठिन अवधारणाओं को समझ सकते हैं, गणित के प्रश्न हल कर सकते हैं और तुरंत स्पष्टीकरण प्राप्त कर सकते हैं।

लेकिन जानकारी तक पहुँच होना अपने आप में समझ, विवेक या अच्छे चरित्र की गारंटी नहीं है। विद्यार्थियों को ऐसे मार्गदर्शक की आवश्यकता होती है, जो उनकी कठिनाइयों को पहचान सके, उनकी जिज्ञासा को प्रोत्साहित करे और सही ज्ञान तथा भ्रामक जानकारी के बीच अंतर समझा सके।

एक शिक्षक केवल पाठ नहीं पढ़ाता। वह विद्यार्थी की झिझक को पहचानता है, उसकी उलझन को समझता है, छिपी हुई प्रतिभा को सामने लाता है और आत्मविश्वास कम होने पर उसे प्रोत्साहित करता है। कभी-कभी शिक्षक के कुछ प्रेरणादायक शब्द विद्यार्थी की सीखने के प्रति सोच बदल देते हैं और उसके जीवन की दिशा निर्धारित करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

सीखने का भावनात्मक आधार

सीखने की प्रक्रिया का भावनाओं से गहरा संबंध है। विद्यार्थी तब अधिक प्रभावी ढंग से सीखते हैं, जब वे स्वयं को सुरक्षित, सम्मानित और महत्त्वपूर्ण महसूस करते हैं। भय, अपमान और लगातार आलोचना उनकी भागीदारी को कम कर सकते हैं, जबकि प्रोत्साहन और विश्वास ऐसा वातावरण बनाते हैं, जिसमें विद्यार्थी बिना झिझक प्रश्न पूछ सकते हैं और अपनी गलतियों से सीख सकते हैं।

एक संवेदनशील शिक्षक समझता है कि प्रत्येक बच्चे की पारिवारिक पृष्ठभूमि, सीखने की गति, व्यक्तित्व और चुनौतियाँ अलग-अलग होती हैं। कोई विद्यार्थी गणित में कठिनाई महसूस कर सकता है, कोई कक्षा में बोलने से झिझक सकता है, जबकि कोई घरेलू समस्याओं से जूझ रहा हो सकता है। सभी विद्यार्थियों के साथ एक जैसा व्यवहार करना हमेशा उनके साथ न्याय करना नहीं होता।

मानवीय जुड़ाव शिक्षक को इन भिन्नताओं के अनुसार सहायता प्रदान करने में सक्षम बनाता है। व्यक्तिगत बातचीत, धैर्यपूर्वक समझाना या विश्वास से भरे कुछ शब्द किसी संघर्षरत विद्यार्थी में दोबारा उत्साह पैदा कर सकते हैं। कोई भी डिजिटल मंच शिक्षक और विद्यार्थी के बीच लंबे समय में विकसित होने वाली समझ, विश्वास और आत्मीयता की पूरी तरह नकल नहीं कर सकता।

तकनीक सहयोगी है, विकल्प नहीं

तकनीक को अस्वीकार करना भी बुद्धिमानी नहीं होगी। एनिमेशन, सिमुलेशन, आभासी प्रयोगशालाओं और इंटरैक्टिव अभ्यासों के माध्यम से कठिन अवधारणाओं को आसानी से समझाया जा सकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता विद्यार्थियों को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार अभ्यास उपलब्ध करा सकती है, सीखने में आने वाली कमियों की पहचान कर सकती है और शिक्षकों को शैक्षिक सामग्री तैयार करने में सहायता दे सकती है। ऑनलाइन मंच दूरदराज और संसाधनों से वंचित क्षेत्रों के विद्यार्थियों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुँचाने में भी मदद करते हैं।

वास्तविक चुनौती तकनीक और शिक्षक में से किसी एक को चुनने की नहीं, बल्कि दोनों के बीच उचित संतुलन स्थापित करने की है।

तकनीक को वे कार्य करने देने चाहिए, जिन्हें वह कुशलतापूर्वक कर सकती है। इससे शिक्षकों को मार्गदर्शन, चर्चा, रचनात्मकता और व्यक्तिगत सहायता के लिए अधिक समय मिल सकेगा। उदाहरण के लिए, विद्यार्थी डिजिटल ऐप के माध्यम से गणित का अभ्यास कर सकते हैं, जबकि कक्षा में तार्किक चिंतन और वास्तविक जीवन में गणित के उपयोग पर चर्चा की जा सकती है। विज्ञान के सिमुलेशन कठिन प्रक्रियाओं को समझा सकते हैं, जबकि शिक्षक विद्यार्थियों को प्रयोग करने, नैतिक दृष्टिकोण विकसित करने और प्राकृतिक संसार के प्रति जिज्ञासु बनने के लिए प्रेरित कर सकता है।

जब तकनीक कक्षा पर हावी होने के बजाय शिक्षक की सहयोगी बनती है, तब शिक्षा अधिक सार्थक और समावेशी बनती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानवीय संवेदना

शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का बढ़ता उपयोग नए अवसर प्रदान करता है, लेकिन इसके साथ कुछ महत्त्वपूर्ण चिंताएँ भी जुड़ी हैं। AI प्रणालियाँ व्याख्याएँ दे सकती हैं, प्रश्नों के उत्तर दे सकती हैं और सीखने की गतिविधियों की सिफारिश कर सकती हैं। फिर भी, इनके उत्तर कभी-कभी गलत, अधूरे या विद्यार्थी की परिस्थितियों के अनुकूल नहीं होते।

इसलिए विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, डिजिटल साक्षरता और जानकारी की सत्यता जाँचने की क्षमता विकसित करना आवश्यक है। शिक्षक उन्हें मान्यताओं पर प्रश्न उठाने, प्रमाणों का मूल्यांकन करने और तकनीक का जिम्मेदारी से उपयोग करने में सहायता करते हैं।

इसके साथ ही नैतिक मूल्यों का विकास भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। ईमानदारी, सहानुभूति, सहयोग, विविधता के प्रति सम्मान और सामाजिक जिम्मेदारी केवल जानकारी देने से विकसित नहीं होते। ये गुण अच्छे उदाहरणों, संवाद, साझा अनुभवों और सार्थक संबंधों के माध्यम से विकसित होते हैं।

इंजीनियरिंग शिक्षा में पृथ्वी विज्ञान: ज्ञान और व्यावहारिक अनुभव के बीच सेतु

डॉ. विजय गर्ग

इंजीनियरिंग केवल गणित, भौतिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग का नाम नहीं है, बल्कि यह प्राकृतिक संसार को समझने और उसके साथ सामंजस्य स्थापित करके कार्य करने की कला भी है। प्रत्येक सड़क, पुल, बाँध, सुरंग, भवन और बिजलीघर किसी न किसी रूप में पृथ्वी से जुड़ा होता है। इसलिए सुरक्षित बुनियादी ढाँचे के निर्माण, प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन और पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान के लिए इंजीनियरों को पृथ्वी विज्ञान का ज्ञान होना आवश्यक है। इंजीनियरिंग शिक्षा में पृथ्वी विज्ञान को शामिल करके सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक समस्याओं के समाधान के बीच की दूरी को कम किया जा सकता है।

पृथ्वी विज्ञान में भूविज्ञान, भूभौतिकी, मौसम विज्ञान, जल विज्ञान, समुद्र विज्ञान और इनसे संबंधित अन्य विषय शामिल हैं। ये विषय पृथ्वी की संरचना, जल की गति, चट्टानों के निर्माण, मिट्टी के गुणों तथा हमारे पर्यावरण को प्रभावित करने वाली प्राकृतिक प्रक्रियाओं की जानकारी देते हैं। यह ज्ञान इंजीनियरों को निर्माण कार्य, संसाधन प्रबंधन और सतत विकास से संबंधित उचित निर्णय लेने के लिए वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है।

पृथ्वी विज्ञान का सबसे महत्त्वपूर्ण उपयोग सिविल इंजीनियरिंग में होता है। किसी भवन, पुल, राजमार्ग या बाँध का निर्माण करने से पहले इंजीनियरों के लिए उस स्थान की भूवैज्ञानिक विशेषताओं को समझना आवश्यक है। मिट्टी की मजबूती, भूजल का स्तर, चट्टानों की संरचना और भूस्खलन की संभावना किसी भी संरचना की स्थिरता को प्रभावित करती है। भूवैज्ञानिक जाँच के अभाव में नींव कमजोर हो सकती है, संरचनाओं को नुकसान पहुँच सकता है और महँगी मरम्मत की आवश्यकता पड़ सकती है। भूविज्ञान और मिट्टी के व्यवहार का अध्ययन करके इंजीनियरिंग के विद्यार्थी जोखिमों का आकलन करना तथा अधिक सुरक्षित डिजाइन तैयार करना सीखते हैं।

आपदा प्रबंधन में भी पृथ्वी विज्ञान की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। भूकंप, बाढ़, भूस्खलन, ज्वालामुखी विस्फोट और समुद्री तटों का कटाव भारी मानवीय तथा आर्थिक क्षति पहुँचा सकते हैं। भूवैज्ञानिक जोखिमों का ज्ञान रखने वाले इंजीनियर भूकंपरोधी भवनों, बेहतर जल निकासी प्रणालियों, सुरक्षा बाँधों और मजबूत बुनियादी ढाँचे का निर्माण कर सकते हैं। स्थानीय भूवैज्ञानिक परिस्थितियों को समझने से योजनाकार जोखिम वाले क्षेत्रों की पहचान कर सकते हैं और वहाँ अनुचित निर्माण से बच सकते हैं। भारत जैसे भौगोलिक विविधता वाले देश में यह अंतर्विषयी ज्ञान विशेष रूप से उपयोगी है।

जल संसाधनों का प्रबंधन पृथ्वी विज्ञान और इंजीनियरिंग के बीच एक अन्य महत्त्वपूर्ण संबंध है। जल विज्ञान और भूजल विज्ञान वर्षा के स्वरूप, नदी प्रणालियों, भूजल की गति और जलभृतों की विशेषताओं को समझने में सहायता करते हैं। यह ज्ञान जलाशयों, सिंचाई प्रणालियों, जल निकासी और टिकाऊ जलापूर्ति परियोजनाओं के निर्माण के लिए आवश्यक है। अनेक क्षेत्रों में भूजल का स्तर गिर रहा है और वर्षा अनियमित होती जा रही है। ऐसी स्थिति में भावी इंजीनियरों को जल की उपलब्धता, भूवैज्ञानिक संरचनाओं और मानवीय गतिविधियों के बीच संबंध समझना चाहिए।

> **आपदा प्रबंधन में भी पृथ्वी विज्ञान की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। भूकंप, बाढ़, भूस्खलन, ज्वालामुखी विस्फोट और समुद्री तटों का कटाव भारी मानवीय तथा आर्थिक क्षति पहुँचा सकते हैं। भूवैज्ञानिक जोखिमों का ज्ञान रखने वाले इंजीनियर भूकंपरोधी भवनों, बेहतर जल निकासी प्रणालियों, सुरक्षा बाँधों और मजबूत बुनियादी ढाँचे का निर्माण कर सकते हैं। स्थानीय भूवैज्ञानिक परिस्थितियों को समझने से योजनाकार जोखिम वाले क्षेत्रों की पहचान कर सकते हैं और वहाँ अनुचित निर्माण से बच सकते हैं।**

पर्यावरण इंजीनियरिंग को भी पृथ्वी विज्ञान की शिक्षा से महत्त्वपूर्ण लाभ मिलता है। खनन, औद्योगिक विकास, शहरीकरण और बुनियादी ढाँचे के विस्तार से पारिस्थितिकी तंत्र प्रभावित हो सकते हैं, भूजल दूषित हो सकता है और मिट्टी का कटाव तेज हो सकता है। पर्यावरणीय भूविज्ञान का ज्ञान इंजीनियरों को इन प्रभावों का आकलन करने तथा व्यावहारिक समाधान विकसित करने में सहायता करता है। विद्यार्थी प्रदूषित स्थलों की जाँच, निर्माण अपशिष्ट के प्रबंधन, जलग्रहण क्षेत्रों की सुरक्षा और इंजीनियरिंग परियोजनाओं के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने के तरीके सीख सकते हैं। इससे केवल तकनीकी दक्षता के बजाय जिम्मेदार विकास को बढ़ावा मिलता है।

जलवायु परिवर्तन के कारण पृथ्वी विज्ञान की प्रासंगिकता और बढ़ गई है। बढ़ता तापमान, वर्षा के बदलते स्वरूप, ग्लेशियरों का पिघलना और समुद्र के जलस्तर में वृद्धि बुनियादी ढाँचे की योजना के सामने नई चुनौतियाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। इंजीनियरों को बाढ़ के बदलते जोखिम, तटीय क्षेत्रों की संवेदनशीलता, जल संकट और संरचनाओं की दीर्घकालिक मजबूती को ध्यान में रखना चाहिए। जलवायु वैज्ञानिकों, भूवैज्ञानिकों और इंजीनियरों के बीच सहयोग से जलवायु-अनुकूल शहरों, टिकाऊ परिवहन नेटवर्क और बेहतर आपदा तैयारी की योजनाएँ विकसित की जा सकती हैं।



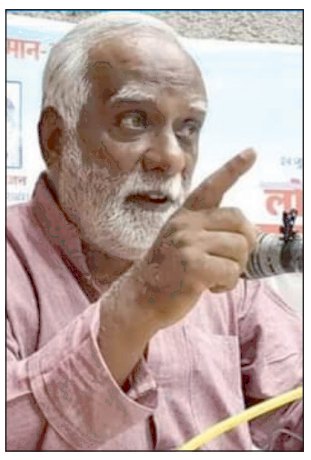
इतनी महत्ता के बावजूद कुछ इंजीनियरिंग पाठ्यक्रमों में पृथ्वी विज्ञान को सीमित स्थान मिलता है। विद्यार्थी वैज्ञानिक सिद्धांत तो सीखते हैं, लेकिन उन्हें वास्तविक परिस्थितियों में लागू करने के पर्याप्त अवसर नहीं मिलते। इस कमी को दूर करने के लिए क्षेत्रीय भ्रमण, भूवैज्ञानिक मानचित्रण, प्रयोगशाला परीक्षण, पर्यावरणीय सर्वेक्षण और इंजीनियरिंग विफलताओं के अध्ययन को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS), रिमोट सेंसिंग और त्रि-आयामी भूवैज्ञानिक मॉडलिंग जैसे डिजिटल साधन भी व्यावहारिक शिक्षा को अधिक प्रभावी बना सकते हैं।

विश्वविद्यालयों को सिविल इंजीनियरिंग, पर्यावरण इंजीनियरिंग, भूविज्ञान और भूभौतिकी विभागों के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करना चाहिए। उद्योगों के साथ साझेदारी और अंतर्विषयी अनुसंधान परियोजनाएँ विद्यार्थियों को वास्तविक इंजीनियरिंग चुनौतियों से परिचित करा सकती हैं। मूल्यांकन प्रणाली में भी आलोचनात्मक चिंतन, क्षेत्रीय निरीक्षण और वैज्ञानिक प्रमाणों के आधार पर निर्णय लेने की क्षमता को महत्त्व दिया जाना चाहिए।

अंततः, इंजीनियरिंग शिक्षा का उद्देश्य केवल संरचनाओं का निर्माण करने वाले स्नातक तैयार करना नहीं, बल्कि ऐसे पेशेवर विकसित करना भी है जो उन संरचनाओं के आसपास के भू-दृश्य, प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरणीय प्रक्रियाओं को समझ सकें। पृथ्वी विज्ञान यह आवश्यक दृष्टिकोण प्रदान करता है। भूवैज्ञानिक ज्ञान और इंजीनियरिंग के व्यावहारिक अनुप्रयोग को जोड़कर शिक्षण संस्थान ऐसे इंजीनियर तैयार कर सकते हैं जो तकनीकी रूप से सक्षम, पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार और भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हों।

पृथ्वी वह आधार है, जिस पर इंजीनियरिंग की पूरी इमारत खड़ी है। इसे समझना इंजीनियरिंग शिक्षा में कोई वैकल्पिक विषय नहीं, बल्कि एक सुरक्षित, टिकाऊ और आपदाओं का सामना करने में सक्षम विश्व के निर्माण की अनिवार्य शर्त है।

शिवराजी आँसू





(आलेख : बादल सरोज)

दिखावटी आँसूओं के मामले में कहावत में वैसे तो मगरमच्छ और घड़ियालों की कुख्याति हैं, मगर जिनमें सीखने की ललक होती है, वे किसी से भी सीखने को तत्पर और उत्सुक विद्यार्थी बने रहते हैं। शास्त्रों में भी कहा गया है "काकः चेष्टा, बको ध्यानं, श्वान निद्रा तथैव च। अल्पाहारी, गृहत्यागी, विद्यार्थी पंचलक्षणम्।।" मोदी मंत्रिमंडल में कृषि विभाग के मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने अपनी इसी निष्ठा का परिचय दिया और अचानक से आदिवासियों के लिए भाव-विगलित होकर, रुंधे गले से अश्रु बहाते नजर आये। अपनी पार्टी की सरकार के ही खिलाफ धरने पर बैठे और जिन्हें कठोर कहा जा सकता है, ऐसे शब्दों में वन विभाग के अधिकारियों की लानत-मलामत की। शिवराज सिंह चौहान मध्यप्रदेश के ही भूतपूर्व मुख्यमंत्री हैं, उनके आगे पूर्व लिखे हुए काफी अरसा गुजर चुका है, किन्तु अपने भूतत्व को उनका मन अभी तक स्वीकार नहीं कर पाया है। उनके अश्रु-पर्व को कई लोगों ने इससे भी जोड़कर देखा : ऐसा हो भी सकता है – नहीं भी हो सकता। इस हुए-अनहुए के भेद में पड़ने की बजाय यह जो प्रहसन हुआ है, उसे उसकी पूरी संलग्नता के साथ देखना ज्यादा उपयोगी होगा।

हुआ यह कि मध्य प्रदेश सरकार के वन विकास निगम के अमले ने सीहोर जिले के बुदनी इलाके के गाँव कोसमी में जाकर तोड़फोड़ कर दी। करीब 12 आदिवासी परिवारों के मकान तोड़ दिए गए, उनकी फसलें नष्ट कर दी गयीं। मकानों पर बुलडोजर चला दिए गए। देखने वाले बताते हैं कि घरों को गिराने के साथ-साथ आदिवासियों की खड़ी फसलें -- मक्का और तुअर – पर भी रोलर चला दिया गया। बात यहीं तक नहीं रोकी। वन विभाग के अमले ने आदिवासियों के कुओं को मिट्टी से पाट दिया। यह सब तब हुआ, जबकि पीड़ित परिवार दावा करते रहे कि वे वर्ष 2004 – यूपीए प्रथम के कार्यकाल में बने आदिवासी वनाधिकार क़ानून में तय समयावधि से एक साल पहले -- से उस भूमि पर निवास कर रहे हैं। गोदी मीडिया के अनुसार, वन अधिकारियों के हवाले से इस कार्यवाही को अवैध अतिक्रमण हटाने की सामान्य कार्यवाही बताया गया है।

जो हुआ वह यकीनन बहुत पीड़ादायी है। बसे-बसाए घरों और बोई हुई फसल पर बुलडोजर चलाये जाने का दर्द असहनीय होता है। एक घर अचानक से खानाबदोश और शरणार्थी में बदल जाता है : फिर यहाँ तो पूरे दर्जन भर परिवार थे। इस लिहाज से तो शिवराज सिंह की पीड़ा स्वागतयोग्य होनी चाहिए? बिलकुल होनी चाहिए। मगर क्या पीड़ाओं और संवेदनाओं को इतना सेलेक्टिव – चुनिन्दा -- होना चाहिए कि सीहोर की दिमनी में आँखें आंसूओं से भर जाएँ, बाकी प्रदेश में उससे कहीं ज्यादा बड़े पैमाने पर हो रही इसी तरह की, कई जगह इससे भी अधिक निर्मम कार्यवाहियों पर धृतराष्ट्र बन जाएँ? समस्या ठीक यहीं से शुरू होती है। सीहोर की कोसमी में जो हुआ, वह गलत है तो, सीधी और शहडोल और अनूपपुर की कुसमी या अन्य नामधारी गाँवों के आदिवासियों के साथ जो हुआ, वह भी गलत है। शिवराज सिंह जैसे कद के नेता को इसी साल हुए सीधी, सिंगरौली, देवास, बुरहानपुर, बड़वानी, पन्ना और छतरपुर जिलों में आदिवासियों को ज़मीन से बेदखल किए जाने और गैर-आदिवासियों को ज़मीन बेचे जाने के मामलों पर भी उसी शिद्दत के साथ आवाज उठाना चाहिए। खुद अपने मुख्यमंत्रित्वकाल में की गयी जबरिया बेदखलियों के लिए भी खेद जताना चाहिए। ऐसा न करने की वजह बुदनी में धरना स्थल पर बोले गए उनके एक कथन से साफ़ समझ आ जाती है। आदिवासियों की बेदखली का विरोध – सही विरोध – करते हुए उन्होंने बताया कि इन आदिवासियों ने विधानसभा हो या लोकसभा, हर चुनाव में भाजपा को वोट दिया है। यह हमारे लोग हैं। यह तर्क बहुत बोदा है। इससे यह अर्थ निकलता है कि जिन्होंने किसी कारण की वजह से भाजपा को वोट नहीं दिया, वे उजाड़े जा सकते हैं!! क्या इसीलिए शिवराज सिंह बालाघाट के बैगा आदिवासियों के 44 ब्च्चों की अकाल मौतों के बारे में एक शब्द नहीं बोले, क्योंकि उनके क्षेत्र से भाजपा चुनाव नहीं जीती। अगर ऐसा है, तो सचमुच बहुत आपत्तिजनक है।

शिवराज सिंह को बुदनी जाना चाहिए था – वह दशकों तक उनका विधानसभा और लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र रहा है। मगर वे 16 साल 8 महीने इस प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे हैं। उन्हें बालाघाट की बैगा बच्चों की मौतों पर भी बोलना चाहिए और थोड़ी-बहुत इसकी जिम्मेदारी भी स्वीकार करनी चाहिए। ये मौतें इतनी चिंताजनक थीं कि अन्यथा अलग तरह की भूमिका निबाहने वाले भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली पीठ को मध्य प्रदेश सरकार को नोटिस जारी करने के साथ इसे ₹बेहद दुर्भाग्यपूर्ण₹ बताना पड़ा। शिवराज जानते हैं कि इस तरह की मौतें, मृत्यु नहीं कही जाती। ऐसी मौतें जिन्हें टाला जा सकता है, उन्हें सांस्थानिक हत्या कहा जाता है। अनुसूचित जनजाति आयोग के अलावा, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की नेशनल ज्वाइंट आउटब्रेक रिस्पांस टीम ने भी यह पाया था कि सुदूर आदिवासी गांवों में स्वास्थ्य देखभाल, बीमारी की निगरानी और पोषण सेवाओं में बेहद गंभीर खामियां थीं। शिवराज सिंह यदि वास्तव में आदिवासियों के लिए द्रवित हैं, तो उन्हें बालाघाट जाना चाहिए था। जाना तो उन्हें सागर भी चाहिए था, जहां ज़हरीली शराब कांड हुआ, जाना तो छतरपुर भी चाहिए था, जहां केन बेतवा से विस्थापित जल समाधि लिए बैठे हैं और उनकी पार्टी की सरकार सुन भी नहीं रही है।

इन सब जगहों पर जाना तो दूर की बात है, उन्होंने, जिस प्रदेश के वे बरसों बरस मुख्यमंत्री रहे, उस प्रदेश में घटी इन घटनाओं पर शोक संवेदना तक नहीं जताई। ऐसी स्थिति में यह कहना गलत नहीं होगा कि प्रदेश की राजनीति में अपनी ही पार्टी में चल रही गुटबाजी में अपनी गोटी लाल करने के लिए वे आदिवासियों का मोहरे की तरह की इस्तेमाल कर रहे हैं। इसी के साथ जिस राजनीतिक पार्टी की सरकार है, उस राजनीतिक पार्टी के जुल्म और विफलताओं पर उभरने वाले जायज आक्रोश को इधर उधर भटकाने के प्रयत्न भी कर रहे हैं। सारी भद्रा अधिकारियों पर उतार कर असली गुनहगारो यानि सरकार में बैठे मुख्यमंत्री, मंत्रियों और उनकी राज्नीतिक पार्टी को बचा रहे हैं।

शिवराज ऐसी अदा दिखाने में पारंगत है। अपनी ही सरकार द्वारा 6 जून 2017 के मंदसौर गोलीकांड में 6 किसानों को भून देने के बाद वे दो दिन की अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल का प्रहसन कर चुके हैं। मगर काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती – दिखावटी बयानबाजी से भाजपा सरकार के पापों की जिम्मेदारी से वे खुद को अलग नहीं कर सकते। लोगों को हमेशा झांसे में नहीं रखा जा सकता।

(लेखक लोकजतन के संपादक और अखिल भारतीय किसान सभा के संयुक्त सचिव हैं।

संवेदनशील व्यवहार के साथ करें हर पीड़ित की सहायता : सीएम योगी

परिवहन विशेष न्यूज



गोरखपुर। शारदीय नवरात्र और विजयादशमी के तीन दिन आनुष्ठानिक कार्यक्रमों में व्यस्त रहने के बावजूद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बुधवार सुबह जनसमस्याओं के निस्तारण को प्राथमिकता दी। उन्होंने गोरखनाथ मंदिर में जनता दर्शन का आयोजन किया।

मुख्यमंत्री ने करीब 200 लोगों की समस्याएं सुनीं और अधिकारियों को त्वरित निस्तारण के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जनकल्याण और नागरिकों के जीवन में खुशहाली लाना सरकार का संकल्प है। हर पीड़ित के साथ संवेदनशील व्यवहार कर समस्याओं का समाधान सुनिश्चित किया जाए। जनता दर्शन के दौरान महंत दिग्विजयनाथ स्मृति भवन के सामने सीएम खुद लोगों के पास पहुंचे। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि किसी की जमीन पर अवैध कब्जा करने वाले और कमजोरों को उजाड़ने वालों को बख्शा न जाए। उनके खिलाफ कठोर कानूनी कार्रवाई की जाए। पारिवारिक जमीनी विवादों का निस्तारण आपसी संवाद से कराया जाए। राजस्व और पुलिस से जुड़े मामलों में पूरी पारदर्शिता और निष्पक्षता बरतने को कहा। जनता दर्शन में उपचार के लिए आर्थिक सहायता मांगने आए लोगों को सीएम योगी ने भरपूर मदद का भरोसा दिया। अधिकारियों को इस्टीमेट की प्रक्रिया जल्द पूरी कर शासन को भेजने के निर्देश दिए। उन्होंने लोगों से आयुष्मान कार्ड के बारे में पूछा और जरूरतमंदों का कार्ड बनवाने को कहा।

प्रिंसिपल पर हमले के खिलाफ खूंटी : अनिश्चितकालीन बंदी का अल्टिमेटम

डॉ दीपक कुमार घोष

खूंटी। भगत सिंह चौक और बाजार टांड़ को आर सी संत मिखाएल मध्य विद्यालय खूंटी के प्रींसिपल फादर बेनेदिक्त बरला के उपर जानलेवा हमला के खिलाफ में आक्रोशित खूंटी वासियों ने आदिवासी मूलवासी समन्वय समिति सह समस्त सामाजिक संगठनों के नेतृत्व में बंद किया और लोगों ने रोड जाम कर विरोध प्रदर्शन किया। सामाजिक संगठनों के अगुवाओं ने कहा कि यह न केवल फादर बेनेदिक्त पर व्यक्तिगत हमला है बल्कि सामाजिक और शैक्षणिक संस्थानों पर हमला है जिसे अमन पसंद खूंटी जिले के लोग कभी बर्दाश्त नहीं करेगी। संयोजक मार्शल बरला ने कहा कि एक वर्ष के अंदर सामाजिक व शैक्षणिक आगुवा पड़हा राजा सोमा मुंडा की हत्या और अब पुनः शैक्षणिक संस्था के अगुवा फादर बेनेदिक्त की हत्या का प्रयास खूंटी जिला प्रशासन और विजीलेंस की विफलता है।आबुआ सरकार और रिव्रलरिव्रलाता खूंटी जिला की खोखली प्रशासनिक व्यवस्था को दिखाता है। समन्वय समिति के अध्यक्ष चन्द्र प्रभात मुंडा ने कहा कि जिला प्रशासन की नाक के नीचे इस तरह का सामाजिक संस्थानों पर हमला सरकार, प्रशासन और विजीलेंस की असफलता का परिचयक है। खूंटी जिला अध्यक्ष जोनसन होरो ने कहा कि प्रशासन जमीन और बालू दलालों को संरक्षण देगी लेकिन जिला के सरकारी गैर-सरकारी सामाजिक संगठनों के संस्थाओं और संचालकों के हमलावरों को गिरफ्तार नहीं कर सकती है और बार बार मामले को लीपा पोती करती है यह इस अपराधिक घटना के प्रति आक्रोश व्यक्त किया और नौ सूत्री मांग जिला प्रशासन के समझ रखी:-

हमलावारों की गिरफ्तारी,

S I T गठन ,फोरेंसिक जांच किया जाय, सी सी टी वी फूटेज को सार्वजनिक किया जाय,परिवार के अन्य सदस्यों को सुरक्षा मुहैया कराया जाय, घटना के जांच की रिपोर्ट को सार्वजनिक किया जाय, दोषियों को गिरफ्तारी के बाद फास्ट कोर्ट में सुनवाई किया जाय एवं कड़ी से कड़ी कानूनन सजा दिया जाय, भविष्य में इस तरह की घटना किसी भी सम्मानित व्यक्ति व संस्थाओं पर न हो यह समीक्षा कर सुनिश्चित किया जाए,

यदि हमलावरों की गिरफ्तारी १४ घंटे के अन्दर नहीं होती है तो पुनः अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन व संपूर्ण झारखंड बंद किया जाएगा। धरना प्रदर्शन में दुर्गावती ओड़ेया, नरेश तिर्की,अनुप मुंडा, विजय संगा, सोमा तिडू, अमित पूर्ती,नगजन सोरें, रोशन उरांव, चार्ल्स याहन, डेविड हमसोय, सुशील संगा, दामु मुंडा,सुरजू हस्सा,जोन जूनास तिडू ,ब्रा लिंडा,रिड़ा दोहरा, राम मुंडा,सलोमी मिंज, इमलिया कंडुलना,रुत होरो,सोनम गुड़िया, सेलिना नाग, निक्की तिर्की,अनुरिता तोपनो,अशीश हेमरोम वगैरह तमाम सामाजिक संगठनों के अगुआ और गणमान्य हजारों महिला पुरुष आदिवासी मूलवासी समुदाय ने इस कृत्य के विरोध में धरना प्रदर्शन में शामिल हुए।

भक्तों ने भंडारा आयोजित कर वितरित किया प्रसाद

पुल प्रहलादपुर के चुंगी नम्बर-तीन स्थित मंदिर पर भक्तों द्वारा भंडारा आयोजित किया, भाजपा नेता और समाजसेवी सुभाष पहलवान ने प्रसाद वितरण किया।

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली
परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक



नई दिल्ली। दक्षिणी दिल्ली के तुगलकाबाद विधानसभा स्थित पुल प्रह्लादपुर के चुंगी नंबर-तीन मंदिर पर विशाल भंडारे आयोजन किया गया। भंडारे में भाजपा नेता और समाजसेवी सुभाष पहलवान ने भी शिरकत की और प्रसाद वितरण किया। बता दें कि महानवमी और दशहरा पर्व के बाद भी अनेकों जगह भंडारे का प्रसाद वितरण किये जा रहे हैं। भंडारे में बड़ी संख्या में भक्त प्रसाद लेने के लिए पहुंचे। बल्कि लोगों को बुलाकर प्रसाद दिया गया। लोगों ने भगवान के चरणों में मत्था टेकने के बाद प्रसाद ग्रहण किया। जिसमें दोपहर से लेकर देर शाम तक प्रसाद लेने वालों का तांता लगा रहा। चुंगी नम्बर -3 मंदिर के बाहर हलुआ और पूड़ी सब्जी का वितरण किया। इस अवसर पर अरुण, प्रकाश झा, सुरेंदर, मनी, रोहित, विक्की, सोनू एवं अन्य साथी मित्रगण उपस्थित रहे।

राजनैतिक व्यंग्य-समागम : 1. गंदी नाली में लुढ़कासन : विष्णु नागर

ये खुशफहमी में हैं। खुशफहमी में जीनेवालों को उनके हाल पर छोड़ देना चाहिए। वे अपने आप लुढ़ककर किसी दिन जमीन पर आ जाएंगे। टांगें ऊपर हों, सिर नीचे हो, तब भी ऐसे लोग खुशफहमी में रहते हैं कि हम पैरों के बल खड़े हैं या कुर्सी पर तनकर बैठे हैं, मगर इनके अलावा सबको मालूम होता है कि ये लुढ़कावस्था में हैं।

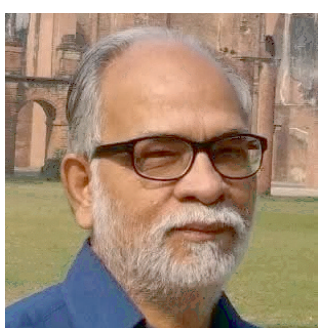
लुढ़कावस्था में ही ये भाषण दे रहे हैं, चीख-पुकार मचा रहे हैं, आदेश-निर्देश दे रहे हैं, गालियां बक रहे हैं, अपनी वीरता के गीत गा रहे हैं। सरकार बदलने की बात पर हाय-तौबा मचा रहे हैं। घबराहट में अपने राजनीतिक विरोधी को सिरफिरा कह रहे हैं। नेहा बोरा और नेहा सिंह राठौर जैसी बहादुर स्त्रियों का चरित्र हनन करने की कोशिश कर रहे हैं। सब उनके मन में गहराई से छुपे डर को समझकर इनकी इस हालत पर हंस रहे हैं, इनका मजा.ले रहे हैं, मगर इन्हें पता नहीं चलता, क्योंकि ये लुढ़कावस्था में पड़े हैं। इनकी हालत ये है कि ये करवट भी नहीं ले पा रहे हैं, पावर के नशे में इतने दयनीय हो चुके हैं।

तो ये लुढ़के पड़े हैं। इन्हें पता नहीं है कि ये जिस जगह लुढ़के पड़े हैं, वह जगह बदबूदार नाली है, जिसकी साल भर में एक बार आधी-अधूरी सफाई होती है। नशे में आदमी हो या समूह या किसी पार्टी का नेता, उन्हें लुढ़कने में सबसे ज्यादा मजा. उसी जगह पर आता है, जहां नाली होती है। जगह जितनी बदबूदार होती है, उतना ही इन्हें आनंद आता है। एसी का मज़ा मिलता है। तो ये उस जगह लुढ़के पड़े हैं।

जिनका कोई घर होता है, बीवी-बच्चे होते हैं, अंधेरी रात में भी उनके घर वाले नाली-नाली ढूंढ़ते हुए खींच-पकड़कर ले आते हैं, नहला-धुला कर बिस्तर में लिटा देते हैं। इनका तो कभी कोई अपना रहा नहीं। इनका बनने की जिसने भी कोशिश की, उसके साथ इन्होंने दगा किया। ये हमेशा से केवल अपने रहे हैं। जो इनके अपने थे, कभी थे, उन्हें इन्होंने दुत्कारा।

ये आज नाली में उल्टे पड़े हैं, मगर ख्वाब देख रहे हैं कि ये सीधे, तनकर खड़े हैं, होश में हैं और टेलिप्रांप्टर से भाषण दे रहे हैं और देश की जनता इनकी बात बहुत गौर से सुन रही है। इनका डंका पूरी दुनिया में बज रहा है, जबकि इनका डंका तो





अयोध्या में भी बजना बंद हो चुका है, जहां इन्होंने धूमधाम से मंदिर बनवाया था और वहां अब चोर की तरह देखे जा रहे हैं!

इनके पास बारह साल से ज्यादा समय से किसी न किसी झूठ और बेईमानी से सत्ता है, इसलिए लुढ़कावस्था में भी ये खुशफहमी में हैं कि ये पहले से ज्यादा मजबूती से ज़मीन पर खड़े हैं। ज़मीन इनके नीचे है और आकाश इनके ऊपर। ये नशे में हैं और इनका हाल उस फिल्म के हीरो राजकपूर से भी बुरा है, जिसे कम से कम यह अच्छी तरह मालूम था कि वह नशे में है और इसके लिए वह माफी मांग रहा है।

दारू का नशा सुबह उतर जाता है। सत्ता अगर नशा बन जाए, तो वह सत्ता के जाने के बाद भी नहीं उतरता। आधी बेहोशी में अगले पांच साल और उसके बाद के भी पांच साल गुजरते हैं।जिस पार्टी के नेता को पहली बार एक साथ बारह साल से भी अधिक समय तक यह नशा करने का मौका मिला हो, वह कुछ ज्यादा ही खुशफहमी में रहता है, क्योंकि उसने इस दौरान नशा ही नशा किया है और नशा ही करवाया है। नशा ही उसका सनातन है, नशा ही उसका विकास!

इन्हें मुगालता है कि सत्ता में रहने का हर खेल ये जानते हैं। ऐसे नहीं, तो ये वैसे अपने विरोधियों को पटकनी दे देंगे। इन नये-नये लड़के-लड़कियों का सत्ता बदलने का नशा ये चुटकी में हिरन कर देंगे। ये तुर्यावस्था में हैं। बड़ी-बड़ी डींगे मारना इनका स्वभाव है। इन्हें विश्वास है कि यह आंधी और तूफान जल्दी ही थम जाएगा। आकाश फिर साफ़ हो जाएगा। धुंध फिर छंट जाएगी। धूप फिर खिल जाएगी। इनके अच्छे दिन लौट आएंगे। तब ये दिखाएंगे कि चारों ओर कितनी हरियाली है, कितने फूल हैं, कितनी खुशबू है। जनता को तब पीला भी फिर से हरा दिखने लगेगा। बिना गंध के फूलों से महक आएगी। हम कहेंगे कि देखो आकाश नीला है, तो लोग न केवल इसे मानेंगे, बल्कि कहेंगे कि यह नान-बायोलॉजिकल प्रभु की कृपा से नीला है, वरना हमने तो इससे पहले आकाश को हमेशा काला ही देखा है!

चूंकि ये नशे में उल्टे गिरे पड़े हैं, तो इन्हें कभी धर्मेन्द्र प्रधान तो कभी मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार को हटाने की मांग करने वाले सब आलतू-फालतू लगते हैं। इन्हें लगता है कि एक दिन हमसे लड़ते-लड़ते, मार खाते-खाते, चमड़ी उधड़वाते- उधड़वाते ये थक जाएंगे और हार मान जाएंगे।माफी मांगने आएंगे कि हे नान-बायोलॉजिकल प्रभु, हमें माफ कर दो, हमसे ऐतिहासिक गलती हो गई। हम फारेन फंडिंग का हल्ला मचाएंगे, तो ये चोर की तरह सरपट भागते नज़र आएंगे।जिनके पास काम-धंधा होगा, वे उसमें लग जाएंगे, वरना काम-धंधे के लिए ये इधर-उधर धक्के खाएंगे। हम इन भूतपूर्व आंदोलनकारियों को ब्लैक लिस्ट कर देंगे। न इन्हें सरकारी नौकरी देंगे, न प्राईवेट नौकरी करने देंगे। इन्हें तड़पा-तड़पाकर मार डालेंगे या इनसे संघे शरणम् गच्छामि करवा लेंगे और फिर सब पूर्ववत हो जाएगा। इस तरह 2047 आ जाएगा। उसके बाद 2097 आना शुरू हो जाएगा।

लेकिन जब भी ये थोड़ी देर के लिए होश में आते हैं, तो ये डर से कांपने लगते हैं कि ये साले, छोकरा-छोकरी सब अब हमसे डरते नहीं। हमारी पुलिस और अर्धसैनिक बलों से नहीं डरते।हम चालीस-पचास हजार पुलिस आदि लगा देते हैं, तो भी ये खौफ नहीं खाते। मार खाते



हैं, मगर रोते नहीं। कहते हैं, जितना मारना हो, मार लो मगर इस सरकार को, इसके चुनाव आयुक्त को बदलवा कर ही रहेंगे। हम मेट्रो और इंटरनेट बंद करवाते हैं तो ये हमसे अदालत में माफी मंगवा लेते हैं। मतदाता सूची की गड़बड़ी ठीक करने का आदेश लेकर खड़े हो जाते हैं। अदालत से पूछवा देते हैं कि बताओ जंतर-मंतर को प्रदर्शन स्थल की सूची से हटाने का फैसला किसने लिया था !पहले सब हमारे बस में था, मगर अब थोड़ा-थोड़ा फिसलता जा रहा है। इसी तरह चला तो सब फिसल जाएगा।

डर के सामने लोग तन कर खड़े हो चुके हैं, सवाल दर सवाल कर रहे हैं। डंडे खा रहे हैं, घसीटे जा रहे हैं, जेल में ठूंसे जा रहे हैं, मगर डर नहीं रहे हैं, बल्कि कह रहे हैं, आओ और डंडे मारो। आओ और आंसू गैस छोड़ो, हम झुकेंगे नहीं। लड़कियां आगे और आगे आ रही हैं, इससे ये और भी अधिक भयभीत हैं। पुलिस से, गुंडों से ये सवाल कर रही हैं। हम पचास साल राज करने आए थे। हर चीज़, हर सांस पर हमने काबू पा लिया था, मगर न जाने कहां से ये आ गए। इनकी गति अब भई सांप छछूंदर केरी है! इन्हें डर खत्म हो जाने से सबसे अधिक डर है, मगर फिर से ये उसी नाली में लुढ़क जाते हैं, जहां इन्हें एसी का मज़ा आता है।

(कई पुरस्कारों से सम्मानित विष्णु नागर साहित्यकार और स्वतंत्र पत्रकार हैं। वे जनवादी लेखक संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भी हैं।)

***

2. झंडा...सॉरी डंडा ऊंचा रहे हमारा! : राजेंद्र शर्मा

देखी, देखी, इन कॉकरोचों की बदमाशी देखी! मोदी जी-शाह जी को छकाने के इरादे से, रोज-रोज नये-नये नारे लगा रहे हैं, रोज-रोज नयी-नयी मांगें उठा रहे हैं। जंतर मंतर-1.0 को छोड़ भी दें तब भी, जंतर मंतर-2.0 में ही अब तक तीन-तीन मांगें बदल चुके हैं। पहले बोले ज्ञानेश कुमार इस्तीफा दे, नहीं तो हम जंतर मंतर-2.0 करेंगे। शाह जी ने भी कहा कि जंतर मंतर-2.0 तो तब होगा, जब जंतर मंतर रहेगा। उनके मंत्रालय ने मंतर पढ़ा और जंतर मंतर छूमंतर कर दिया। पर छूमंतर होने की जगह कॉकरोच अपनी मांग से पलट गए और लगे जंतर मंतर वापस करो की मांग करने। नारे लगाने लगे -- जंतर मंतर हम आएंगे, तुझे पब्लिक को लौटाएंगे। और जब चोरी छिपे दीवार फांदकर जंतर मंतर को खोजने पहुंचे पांच-दस कॉकरोचों को शाह जी की पुलिस ने जेल भेज दिया, तो कॉकरोच पट्ठे फिर पलट गए। कहने लगे, हमें तो तिरंगा फहराना है। हम तिरंगा लेकर आएंगे, कनॉट प्लेस के सेंट्रल पार्क में फहराएंगे!

खैर, शाह जी चाणक्य ठहरे, कॉकरोचों की इन पलटियों के धोखे में आने वालों में थोड़े ही थे। जो फौज-फर्रा पहले कॉकरोचों को जंतर-मंतर के आस-पास भी फटकने नहीं देने के लिए लगाया था, उसे अब तिरंगा फहराने से रोकने की ड्यूटी पर लगा दिया। कनॉट प्लेस को तिरंगा-मुक्त कराने का ऐलान कर दिया -- जो तिरंगा फहराने आएगा, सीधा जेल जाएगा। यह दूसरी बात है कि कनॉट प्लेस की तिरंगा मुक्ति भी उससे कई-कई किलोमीटर दूर तक काम कर रही थी। दीपके को उसके घर से बाहर कदम रखते ही पुलिस ने धर लिया और नेहा बोरा को, कनॉट प्लेस से तीन किलोमीटर दूर मंडी हाउस से। बेशक, कई कॉकरोच कनॉट प्लेस तक पहुंचने के लिए भी धरे गए।

विरोधियों ने बस इत्ती सी बात पर तिल का ताड़ बना दिया। शोर मचा रहे हैं कि मोदी-शाह के राज में तो तिरंगा फहराना भी जुर्म हो गया। सिर्फ तिरंगा फहराने के लिए लोगों को शाह जी की पुलिस गिरफ्तार कर रही है। राहुल एंड कंपनी ने इसमें भी अपना नफरत बनाम मोहब्बत का फलसफा और घुसा दिया -- कॉकरोचों से नफरत करते-करते ये तो तिरंगे से भी नफरत करने लगे। हम तिरंगे से अपनी मोहब्बत और बढ़ाएंगे। तिरंगे के लिए अंग्रेजों के डंडे खाए थे, क्या हम शाह की पुलिस के डंडों से डर जाएंगे -- हम तिरंगा वहीं फहराएंगे!

विरोधियों का अंग्रेजों के टैम की बात बीच में लाना बेशक, सरासर चीटिंग है। माना कि मोदी जी-शाह जी के संघ वाले पुरखे अंग्रेजों के जमाने में तिरंगे के लिए कभी नहीं पिटे थे, लेकिन इससे उनका तब तिरंगे के खिलाफ होना कहां साबित होता है। इसी तरह, माना कि आज शाह जी कनॉट प्लेस को तिरंगा मुक्त करा रहे हैं, लेकिन इससे संघ की आज की पीढ़ी का तिरंगे से नफरत करना कहां साबित होता है? जो मंदिर वहीं बनाएंगे का विरोध करते हुए भी कहते थे कि वे मंदिर के खिलाफ नहीं हैं, अब किस मुंह से तिरंगा वहीं फहराएंगे के विरोध को, तिरंगे का विरोध बता रहे हैं?

रही तिरंगे से प्रेम की बात तो जिन मोदी जी ने इसी पंद्रह अगस्त से पहले, घर-घर तिरंगा फहरवाया था, उनके तिरंगा प्रेम पर कोई सवाल उठा ही कैसे सकता है? क्या हुआ कि जब तिरंगे को राष्ट्र ध्वज बनाया गया था, तब संघ ने उसका अशुभ कहकर विरोध किया था; क्या हुआ कि संघ ने नागपुर में अपने कार्यालय पर पचपन साल तक तिरंगा नहीं फहराने दिया था; अब तो हर-हर मोदी के बाद, घर-घर तिरंगा कर के उन्होंने सारी कसर पूरी कर दी है। फिर, एक कनॉट प्लेस में तिरंगा फहराने के लिए गिरफ्तारियों के लिए, मोदी राज पर तिरंगे से नफरत की तोहमत लगा सकते हैं क्या?

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार:

SBI के 3.75 लाख ग्राहक डेटा लीक का दावा: हैकर समूह 'Siriusim' के खुलासे से साइबर सुरक्षा पर सवाल, प्रामाणिकता की पुष्टि बाकी



पिंकी कुंडू

"Siriusim" नामक एक अनाम हैकर समूह ने सार्वजनिक रूप से दावा किया है कि उसके पास भारतीय स्टेट बैंक (SBI) से जुड़े गोपनीय ग्राहक डेटा का एक बड़ा संग्रह मौजूद है। इस दावे को सबसे पहले साइबर सुरक्षा मॉनिटरिंग हैंडल CyberPulse56 ने X पर चिन्हित किया था, और इसके बाद कई विश्वसनीय समाचार संस्थानों ने इसकी रिपोर्टिंग की है। डेटासेट की प्रामाणिकता, उत्पत्ति, और क्या SBI की प्रणालियाँ सीधे तौर पर समझौता हुई हैं — यह सब नवीनतम अपडेट तक अप्रमाणित है।

◈ **खतरे का स्रोत (Threat Actor):**
- Siriusim

◈ पहली जानकारी (First Disclosure):
- 16 अक्टूबर 2026, BreachForums (डार्क वेब) के माध्यम से

◈ रिपोर्ट किया गया:
• CyberPulse56 द्वारा X पर

◈ कथित डेटासेट (Alleged Dataset):
- 3,75,000 ग्राहक-संबंधित डेटा पंक्तियाँ (CSV प्रारूप)
- 2,722 PDF दस्तावेज़

◈ दावा किए गए डेटा की प्रकृति (Nature of Data Claimed):
- व्यक्तिगत ग्राहक जानकारी
- आवासीय पते
- ऋण आवेदन और सहायक दस्तावेज़
- खाता खोलने के फॉर्म
- अन्य आवेदन-संबंधित रिकॉर्ड

हैकर समूह क्या दावा करता है (What the Hacker Group Claims)

Siriusim का कहना है कि यह डेटासेट उसका पहला खुलासा है, जिससे संकेत मिलता है कि और भी सामग्री मौजूद हो सकती है। समूह ने डेटा के स्वामित्व को साबित करने के लिए नमूना ग्राहक रिकॉर्ड भी पोस्ट किए हैं।

मुख्य दावे:
- डेटा में KYC लिंक्ड दस्तावेज़ शामिल हैं, जिनमें संवेदनशील पहचान प्रमाण होते हैं।
- PDFs में कथित रूप से ऋण फाइलें, सत्यापन दस्तावेज़, और खाता खोलने का कागज़ी कार्य शामिल है।
- समूह ने यह स्पष्ट नहीं किया कि डेटा कैसे प्राप्त किया गया —
  o SBI की मुख्य प्रणालियों से,
  o किसी तृतीय पक्ष प्रोसेसर से,
  o या किसी समझौता किए गए एंडपॉइंट से।

सत्यापन स्थिति (Verification Status)

सभी प्रमुख रिपोर्टों में यह बात दोहराई गई है कि:
- प्रामाणिकता अप्रमाणित है।
- डेटा का स्रोत अज्ञात है।
- डेटा लीक की सीमा स्पष्ट नहीं है।
- SBI ने अभी तक कोई आधिकारिक बयान जारी नहीं किया है।

अतिरिक्त रूप से:
- 3.75 लाख प्रविष्टियाँ अनिवार्य रूप से अलग-अलग ग्राहक नहीं दर्शातीं — कई रिकॉर्ड एक ही व्यक्ति से संबंधित हो सकते हैं।

संभावित प्रभाव (Potential Impact if Data Is Genuine)



यदि डेटा वास्तविक पाया जाता है, तो यह गंभीर साइबर सुरक्षा और वित्तीय जोखिम उत्पन्न कर सकता है:

a. पहचान चोरी और प्रतिरूपण (Identity Theft & Impersonation)
- KYC दस्तावेज़ और ऋण फाइलों में आधार, PAN, पते, आय प्रमाण होते हैं।
- धोखेबाज़ अत्यंत विश्वसनीय प्रतिरूपण स्क्रिप्ट तैयार कर सकते हैं।

b. लक्षित फ़िशिंग और सोशल इंजीनियरिंग (Targeted Phishing)
- सटीक व्यक्तिगत विवरण व्यक्तिगत फ़िशिंग को अधिक प्रभावी बनाते हैं।
- हमलावर SBI अधिकारी, ऋण अधिकारी या सत्यापन एजेंट बनकर संपर्क कर सकते हैं।

c. धोखाधड़ी वाले ऋण आवेदन (Fraudulent Loan Applications)
- वित्तीय दस्तावेज़ों की पहुँच से सिंथेटिक पहचान बनाकर ऋण धोखाधड़ी की जा सकती है।

d. व्यापक बैंकिंग क्षेत्र जोखिम (Broader Banking Sector Risks)
- यह घटना भारतीय वित्तीय संस्थानों पर बढ़ते साइबर हमलों के बीच सामने आई है — जैसे API दुरुपयोग और क्रेडेंशियल चोरी।

अभी भी अज्ञात बातें (What Is Still Unknown)

रिपोर्टिंग के बावजूद कई महत्वपूर्ण पहलू स्पष्ट नहीं हैं:
- क्या SBI की आंतरिक प्रणालियाँ भेदित हुईं या डेटा किसी तृतीय पक्ष विक्रेता से लीक हुआ।
- क्या डेटासेट में डुप्लिकेट या पुरानी प्रविष्टियाँ हैं।
- क्या उजागर डेटा का उपयोग किसी धोखाधड़ी लेनदेन में किया गया है।
- क्या यह लीक सक्रिय ग्राहक खातों से संबंधित है या ऐतिहासिक आवेदन अभिलेखों से।

SBI की प्रतिक्रिया स्थिति (SBI's Response Status)
- 20 अक्टूबर 2026 तक, SBI ने India Today, Economic Times या AP7AM की मीडिया क्वेरीज़ का जवाब नहीं दिया है।

नियामक संदर्भ (Regulatory Context)
- RBI ने हाल ही में बैंकों के लिए साइबर सुरक्षा मानकों को मजबूत किया है।
- यह कथित लीक भारत की बढ़ती डिजिटल बैंकिंग प्रणाली में मौजूद कमजोरियों को उजागर करता है।

मूल्यांकन एवं अनुशंसाएँ (Assessment & Recommendations)

SBI के लिए (Institutional Response):
- दावे का तत्काल फॉरेंसिक सत्यापन।
- ऋण और खाता खोलने वाले दस्तावेज़ संभालने वाले तृतीय पक्ष विक्रेताओं का ऑडिट।
- डेटा लीक की पुष्टि होने पर ग्राहक सूचना प्रोटोकॉल।
- दस्तावेज़ प्रबंधन और KYC भंडारण प्रणालियों को मजबूत करना।

ग्राहकों के लिए (Risk Mitigation):
- SBI के नाम पर आने वाले कॉल/संदेशों से सतर्क रहें।
- OTP, PIN या लॉगिन क्रेडेंशियल कभी साझा न करें।
- अनधिकृत गतिविधि के लिए ऋण आवेदन और क्रेडिट रिपोर्ट की निगरानी करें।
- सत्यापन के लिए केवल SBI के आधिकारिक चैनल का उपयोग करें।

Siriusim का दावा एक संभावित गंभीर डेटा एक्सपोज़र घटना को दर्शाता है, लेकिन यह अभी भी अप्रमाणित है। कथित डेटासेट — 3.75 लाख प्रविष्टियाँ और 2,722 PDFs — अत्यंत संवेदनशील वित्तीय और पहचान दस्तावेज़ों को शामिल करता है, जो वास्तविक होने पर पहचान चोरी, फ़िशिंग और वित्तीय धोखाधड़ी के जोखिम को काफी बढ़ा सकता है। इस घटना के वास्तविक पैमाने और प्रभाव को समझने के लिए SBI का आधिकारिक पुष्टि या खंडन अत्यंत महत्वपूर्ण होगा।

पतितपावन आश्रम के भव्य भूमि पूजन एवं शिलान्यास समारोह का आयोजन

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओडिशा

गजपति/भूबनेश्वर : ओडिशा के गजपति जिले के धनुपोड़ा गांव स्थित पतितपावन आश्रम के नए भवन के निर्माण के लिए आज आध्यात्मिक वातावरण में भव्य भूमि पूजन एवं शिलान्यास समारोह संपन्न हुआ। समाज कल्याण और सेवा कार्यों को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से आयोजित इस पवित्र कार्यक्रम में विश्व हिंदू परिषद (VHP) के प्रमुख पदाधिकारियों, विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों तथा सैकड़ों स्थानीय ग्रामीणों ने भाग लिया। सुबह आश्रम के निवासियों और ग्रामीणों ने श्री तरणीसेन दाश के नेतृत्व में विश्व हिंदू परिषद के क्षेत्र एवं प्रांत स्तर के प्रमुख पदाधिकारियों का पारंपरिक हिंदू रीति-रिवाजों के साथ भव्य स्वागत किया। पूजा से पहले सामूहिक भजन-कीर्तन और हनुमान चालीसा के पाठ से पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया। इसके बाद वैदिक मंत्रोच्चार के बीच आश्रम के नए भवन का विधिवत



शिलान्यास किया गया। इस शुभ अवसर पर अतिथियों और स्थानीय लोगों ने भूमि पूजन में श्रद्धापूर्वक भाग लिया तथा प्रभु का आशीर्वाद प्राप्त किया।

समारोह में विश्व हिंदू परिषद के क्षेत्र सेवा सह-प्रमुख हरिश्चंद्र प्रधान, समर्पण चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष लक्ष्मी नारायण रथ, प्रांत सेवा सह-प्रमुख नागेंद्र महाराणा और वरिष्ठ अधिवक्ता श्रीकांत पंडा सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। सभी ने समाजसेवा के महत्व पर अपने विचार रखे।

इसके अलावा, राज्य में युवाओं और महिलाओं के सशक्तीकरण के क्षेत्र में कार्यरत नेशनल यूथ फॉर सोशल जस्टिस ट्रस्ट के 'सक्षम ओडिशा' मिशन के संस्थापक तथा विश्व हिंदू परिषद के प्रांत संस्कारशाला प्रमुख सरोज कांत बेहरा भी उपस्थित रहे और इस सेवा परियोजना में अपना सहयोग प्रदान किया। भूमि पूजन के अवसर पर क्षेत्र एवं प्रांत के वरिष्ठ पदाधिकारियों तथा नवगठित समिति के सदस्यों की एक उच्चस्तरीय बैठक भी आयोजित की गई। बैठक में विश्व हिंदू परिषद के सेवा विभाग के मार्गदर्शन और स्थानीय लोगों की प्रत्यक्ष भागीदारी से क्षेत्र के विकास एवं जनकल्याण के लिए व्यापक सेवा योजनाएं लागू करने का निर्णय लिया गया।

विशेष रूप से स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का प्रसार, पारंपरिक जैविक कृषि को बढ़ावा, पौष्टिक आहार की व्यवस्था, हिंदू संस्कारों के प्रति जागरूकता तथा युवाओं और महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए स्वावलंबन अभियान के विस्तार पर विस्तृत चर्चा की गई। साथ ही, भविष्य की कार्ययोजना भी निर्धारित की गई।

गजपति जिले के इस दुर्गम क्षेत्र में आश्रम निर्माण कार्य को गति देने और अगले तीन महीनों के भीतर निर्माण पूरा करने के लक्ष्य के साथ उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों की सहमति से एक नई प्रबंधन समिति का गठन किया गया। सर्वसम्मति से समिति के सदस्यों को निम्नलिखित जिम्मेदारियां सौंपी गईं।

सड़कें नहीं झारखंड में मरीज़ खटिये पर, मंत्री-अभियंता यहां कभी बाहर तो कभी अंदर

दो -चार नहीं हजार करोड़ के घोटालेबाज इंजिनियर भी इसी झारखंड से

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची, झारखंड में अनेकों जिले में सड़कें नहीं है सड़क निर्माण विभाग के इंजिनियरों, मंत्री के यहां ईडी छापेमारी कर बड़ी मात्रा में अवैध धनराशि जप्त कर उन्हें सलाखों के पीछे डाल चुकी है । बी एन राम जैसे इंजिनियरों जो हजारों करोड़ के मालिक था देश का चर्चित घोटाला से नाम जूड़ा है । याहां अभियंता भी चंद साल में करोड़पति बनते उस राज्य का नाम झारखंड। अभियंत्रण में पीसी कितना है यह जग जाहिर है। झारखंड बनने के 26 साल हो चुके हैं। इस राज्य का निर्माण आदिवासियों के विकास को ध्यान में रखते हुए किया गया था। हालांकि, इतने वर्ष बीत जाने के बाद भी झारखंड के आदिवासी बहुल संताल परगना समेत अनेकों जिला का हाल बहुत बुरा है।



झारखंड के संताल परगना समेत अनेकों जिले में अभी भी सड़क और स्वास्थ्य का घोर अभाव है। ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क नहीं है। सड़क नहीं होने के कारण मरीज खाट पर निर्भर है। साहिबगंज जिले के बोरियो प्रखंड के मोतीपहाड़ी बड़ा पंचायत अंतर्गत पोड़ैया बेड़ो गांव में सड़क की बदहाली के कारण एक गर्भवती महिला को खाट पर लादकर करीब चार किलोमीटर तक कीचड़ भरे रास्ते से ले जाना पड़ा।

गांव तक 108 एंबुलेंस नहीं पहुंच सकी, जिसके बाद ग्रामीणों ने महिला को खाट पर उठाकर पोड़ैया संथाली गांव पहुंचाया। वहां से टोटो के जरिए उन्हें बोरियो सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया।

जानकारी के अनुसार, गांव निवासी बुधना पहाड़िया की 19 वर्षीय पत्नी सुकुरमुनी पहाड़िन को प्रसव पीड़ा शुरू होने पर परिजनों ने एंबुलेंस बुलाई थी, लेकिन सड़क के अभाव में एंबुलेंस गांव तक नहीं पहुंच सकी।

ग्राम प्रधान चांदू मालतो के अनुसार सड़क निर्माण की मांग को लेकर कई बार आवेदन और आंदोलन किए गए, लेकिन अब तक समस्या का समाधान नहीं हुआ। ग्रामीणों ने जिला प्रशासन से गांव तक पक्की सड़क बनाने की मांग की है।

राजस्थान के गावों को कैसे पंच-परमेश्वर चाहिए?

लेखक कर्नल (डॉ.) बलदेव सिंह चौधरी 'मानव' शेरगढ़ (राजस्थान) में जिला सैनिक कल्याण अधिकारी - प्रस्तुतकर्ता विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र

राजस्थान में पंचायती राज चुनावों की प्रक्रिया चल रही है। ये चुनाव महज सरपंच-पंच चुनने की कवायद नहीं बल्कि यह तय करने का अवसर भी है कि आने वाले पांच साल में गांव किस दिशा में आगे बढ़ेंगे। सबसे बड़ा सवाल यह है कि हम जिन्हें अपना प्रतिनिधि चुनेंगे, वे गांव को किस दिशा में ले जाएंगे? क्या उनका विकास संबंधी नजरिया सड़क, नाली और पेयजल जैसी बुनियादी सुविधाओं तक सीमित रहेगा या वे शिक्षा, रोजगार, वैज्ञानिक सोच, सामाजिक समरसता और पर्यावरण संरक्षण को भी विकास का हिस्सा बनाएंगे? क्या वे गांव को केवल सरकारी योजनाओं का लाभार्थी बनाए रखेंगे या उसे आत्म निर्भर बनाने की दिशा में भी काम करेंगे?

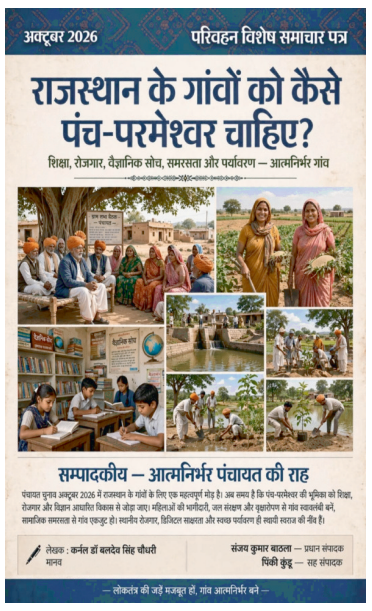
हम अक्सर आदर्श सरपंच की जरूरत की बात करते हैं। लेकिन आदर्श सरपंच वह नहीं, जो केवल विकास कार्य करवा दे। आदर्श सरपंच से अपेक्षा है कि वह गांव की सामूहिक ताकत को पहचाने, लोगों को साथ लेकर चले और आने वाली पीढ़ियों के लिए बेहतर भविष्य की नींव रखे। ऐसे नेतृत्व से ही उत्तम गांव और उत्तम गांवों से श्रेष्ठ भारत का सपना साकार हो सकता है।

मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानता हूं कि मेरा जन्म गांव में हुआ। वहीं पला-बढ़ा और वहीं शिक्षा हासिल की। अपने पिता और परिवार को कठिनाइयों से जूझते देखा। दूर-दराज के गांवों में बुनियादी सुविधाओं के अभाव में जीवन कितना कठिन होता है, यह मैंने किताबों में नहीं पढ़ा बल्कि अपने जीवन में महसूस किया है। मैंने गाँवों को संकटों से जूझते भी देखा है और अपनी जीवटता के बल पर उनसे उबरते भी। कठिन परिस्थितियों के बावजूद ग्रामीण अपने श्रम, सहयोग और संघर्ष से फिर खड़े हो जाते हैं। मैं गांवों में आमूलचूल बदलाव का पक्षधर हूं। सरकारी योजनाएं ग्रामीण विकास के लिए जरूरी हैं लेकिन मैं नहीं चाहता कि कि गांव केवल योजनाओं के निष्क्रिय लाभार्थी बनकर रह जाएं। पंचायतों को स्थानीय संसाधनों, प्रतिभा और सामूहिक प्रयासों के आधार पर गांवों को आत्म निर्भर बनाने की दिशा में काम करना चाहिए। गांवों में रोजगार के अवसर बढ़ें, किसान मजबूत हों, युवा अपनी प्रतिभा का उपयोग कर सकें और पलायन मजबूरी न रहे। यही ग्रामीण विकास की वास्तविक कसौटी है।

मेरी नजर में गांव के विकास में शिक्षा से बढ़कर कुछ नहीं है। शिक्षा के सहारे ही हम ग्रामीण समाज की अनेक समस्याओं का समाधान खोज सकते हैं। अंध विश्वास, सामाजिक पिछड़ापन और अनेक कुरीतियों के बने रहने के पीछे अशिक्षा के साथ-साथ सामाजिक दबाव और पुरानी रुढ़ियों की भी भूमिका है। मैंने अपने परिवार और समाज में मृत्युभोज जैसी कुप्रथा के कारण लोगों को आर्थिक रूप से टूटते देखा है। सामाजिक दबाव में परिवार इस आयोजन के लिए पैसा जुटाते हैं, कर्ज लेते हैं और कभी-कभी बच्चों की पढ़ाई तथा उनके भविष्य को भी दांव पर लगा देते हैं। यह पीड़ादायक है कि जिस धन का उपयोग बच्चों की शिक्षा और परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने में हो सकता है, वह सामाजिक दबाव में खर्च हो जाता है। जागरूकता बढ़ने से मृत्युभोज जैसी कुरीतियों में कमी आई है लेकिन जब जातीय पंचायतों के दबाव में परिवारों को ऐसे आयोजन करने के लिए मजबूर किए जाने की खबरें मिलती हैं तो मन में टीस उठती है। आने वाले चुनावों में चुने जाने वाले सरपंचों से अपेक्षा है कि वे ऐसी कुरीतियों के खिलाफ लोगों को जागरूक करें और उन फैसलों का विरोध करें, जो किसी परिवार को उसकी इच्छा के विरुद्ध खर्च करने या कर्ज लेने के लिए बाध्य करते हैं।

गांवों का विकास नारों से नहीं हो सकता। इसके लिए धरातल पर काम करना होगा। पंचायतें गांवों में पुस्तकालय और अध्ययन केंद्र विकसित करने, विद्यालयों की सुविधाएं सुधारने तथा जरूरतमंद विद्यार्थियों की मदद करने में भूमिका निभा सकती हैं। शिक्षा केवल नौकरी पाने का साधन नहीं बल्कि विवेक और आत्मसम्मान विकसित करने का माध्यम भी है। संविधान नागरिकों से वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और सुधार की भावना विकसित करने की अपेक्षा करता है। पंचायतें विज्ञान गतिविधियों, डिजिटल साक्षरता और नवाचार को बढ़ावा देकर इस दिशा में योगदान दे सकती हैं। आस्था का सम्मान होना चाहिए, लेकिन उसके नाम पर शोषण और भेदभाव को स्वीकार नहीं किया जा सकता।

युवाओं के विकास के लिए खेल मैदान, खेल क्लब और कौशल प्रशिक्षण जरूरी हैं। खेलों से उनमें अनुशासन और



टीम भावना विकसित होती है। कृषि प्रसंस्करण, डेयरी, पशुपालन, सौर ऊर्जा, डिजिटल सेवाओं और हस्तशिल्प से जुड़े प्रशिक्षण युवाओं को गांव में ही रोजगार के अवसर तलाशने में मदद कर सकते हैं। पंचायतों को स्थानीय संस्थानों और सरकारी योजनाओं से समन्वय कर ऐसे अवसर उपलब्ध कराने की पहल करनी चाहिए। खेती, पशुपालन और परिवार की जिम्मेदारियों में महिलाओं का योगदान ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। पंचायतों को उनके लिए आजीविका, प्रशिक्षण और निर्णय प्रक्रिया में भागीदारी के अवसर बढ़ाने चाहिए। साथ ही सरपंच को जातिगत भेदभाव और सामाजिक बहिष्कार के खिलाफ खड़ा होना चाहिए तथा महिलाओं, कमजोर वर्गों और वंचित परिवारों की बात सुननी चाहिए। गांव का विकास तभी सार्थक होगा, जब उसमें सभी की भागीदारी और सम्मान सुनिश्चित हो।

जल संरक्षण और पर्यावरण की रक्षा गांवों के भविष्य से जुड़े सवाल हैं। पंचायतें वर्षा जल संचयन, तालाबों की देखभाल, भूजल संरक्षण और पौधों को बचाने के लिए सामूहिक पहल कर सकती हैं। काम की सफलता केवल खर्च हुई राशि से नहीं, बल्कि जमीन पर आए बदलाव से आंकी जानी चाहिए। पंचायती राज की असली ताकत ग्राम सभा है। विकास की प्राथमिकताएं तय करने में ग्रामीणों की राय ली जानी चाहिए और पंचायत के बजट, स्वीकृत कार्यों तथा खर्च का हिसाब सार्वजनिक होना चाहिए। ग्राम सभा केवल औपचारिक बैठक न बने बल्कि लोगों को सवाल पूछने और फैसलों में भागीदारी का वास्तविक अवसर मिले।

नए सरपंच तो अभी चुने जाएंगे, उनकी जिम्मेदारी तो बाद में तय होगी। उससे पहले मतदाताओं को अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। सरपंच चुनते समय उम्मीदवार की जाति, लोकप्रियता या वादों से आगे जाकर उसकी ईमानदारी, कार्यक्षमता और विकास संबंधी सोच को देखना होगा। जो लोग वोट मांगने आ रहे हैं, क्या उनके पास गांव के लिए कोई व्यावहारिक योजना है? क्या वे युवाओं, महिलाओं, किसानों और कमजोर परिवारों को साथ लेकर चलने की सोच रखते हैं? हम कई बार कम पढ़े-लिखे व्यक्ति को कमतर आंक लेते हैं और डिग्रीधारी व्यक्ति से बहुत उम्मीदें लगा लेते हैं। लेकिन किसी की शैक्षणिक योग्यता ही उसके नेतृत्व की पूरी कसौटी नहीं हो सकती। गांव के अनुभव, लोगों के बीच उसकी विश्वसनीयता, ईमानदारी, प्रशासनिक समझ और सीखने की इच्छा भी महत्वपूर्ण है। मतदाता को व्यक्ति की डिग्री से अधिक उसके व्यवहार, सोच और काम करने की क्षमता को परखना चाहिए।

हम विकसित भारत की बात करते नहीं थकते। लेकिन क्या गाँवों के विकास के बिना यह सपना पूरा हो सकता है? गाँवों में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, विज्ञान और पर्यावरण संरक्षण की स्थिति सुधरेगी, तभी विकसित भारत की नींव मजबूत होगी। इसके लिए सरकारी सहायता के साथ स्थानीय भागीदारी और सामूहिक जिम्मेदारी भी जरूरी है। सरपंचों को ऐसी व्यवस्थाएँ बनाने की कोशिश करनी चाहिए, जो उनके कार्यकाल के बाद भी गाँव के काम आती रहें।

सवाल उठता है कि हम आखिर आदर्श सरपंच किसे कहेंगे? उसे, जो लंबे-लंबे भाषण दे, या उसे जो गांव को अपने पैरों पर खड़ा करने की कोशिश करे? ऐसा गांव, जहां स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर हों, प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा हो और लोग केवल रोजी-रोटी की तलाश में अपना घर छोड़ने को मजबूर न हों। जो जन प्रतिनिधि इस दिशा में काम करेगा, वही आदर्श सरपंच कहलाने का हकदार होगा। उसका गांव उत्तम गांव बनेगा और ऐसे ही गांव मिलकर श्रेष्ठ तथा विकसित भारत की नींव रखेंगे।

नवीन के CJP को समर्थन पर मनमोहन सामल का निशाना, बोले—'BJD नेताओं की बयानबाजी ठीक नहीं'

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओडिशा



भुवनेश्वर: CJP को नवीन पटनायक के समर्थन के मुद्दे पर भारतीय जनता पार्टी (BJP) के प्रदेश अध्यक्ष मनमोहन सामल ने बीजू जनता दल (BJD) पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि BJD नेताओं की विचारधारा में भ्रम की स्थिति पैदा हो गई है। गैर-राष्ट्रीय ताकतों का समर्थन राज्य की जनता बर्दाश्त नहीं करेगी। मनमोहन सामल ने कहा कि कुछ स्वयंभू नेता देशहित से अधिक अपने निजी हितों को महत्व दे रहे हैं। BJD के नेता आज एक बात कहते हैं और कल दूसरी बात। उन्हें पहले स्पष्ट करना चाहिए कि वे आखिर किसके साथ खड़े हैं। उन्होंने आगे कहा कि BJD पहले सभी राजनीतिक दलों से समान दूरी बनाए रखने की बात करती थी। लेकिन अब गठबंधन में शामिल होने के बाद फिर उसी गठबंधन के आह्वान का विरोध कर रही है। उनके अनुसार, BJD नेता दिशाहीन और भ्रमित नजर आ रहे हैं। उन्हें खुद भी पता नहीं है कि कब कौन-सा मुद्दा उठाना है। उन्हें कौन सलाह दे रहा है, इस बारे में भी स्पष्टता नहीं है। मनमोहन सामल ने कहा कि नवीन पटनायक आखिर किस उद्देश्य से CJP को समर्थन दे रहे हैं, इसका जवाब वे स्वयं ही दे सकते हैं। देशविरोधी गतिविधियों से जुड़े लोगों के मुद्दे पर उन्होंने कहा कि देशविरोधी गतिविधियों में शामिल लोगों के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए। चीन और पाकिस्तान के समर्थन में बोलने वालों को देश की जनता कभी बर्दाश्त नहीं करेगी। अपने ही देश में रहकर देश के खिलाफ बोलने की प्रवृत्ति को स्वीकार नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि गैर-राष्ट्रीय ताकतों का समर्थन करना उचित नहीं है। मनमोहन सामल ने अंत में कहा कि जनता सब कुछ देख रही है और हर गतिविधि पर नजर रख रही है। उचित समय आने पर जनता इसका जवाब देगी।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023